सेवा समर्पण

मूल्य ₹ 20

वर्ष-43, अंक-03, कुल पृष्ठ-36, अगहन-पौष, विक्रम सम्वत् 2082, दिसम्बर, 2025

उत्तम जिले में भजन मंडली प्रतियोगिता

उत्तम जिला द्वारा दिनांक 2 दिसंबर 2025, मंगलवार को जिला स्तर पर भजन मंडली प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम में क्षेत्र की विभिन्न मंडलियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया, जिससे संपूर्ण वातावरण भक्तिमय, रोचक एवं आनंद से परिपूर्ण रहा। कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण माननीय श्री अनिल कुमार जी रहे, जो संगीत महाविद्यालय के निदेशक, ऑल इंडिया रेडियो के बी-ग्रेड कलाकार हैं तथा दूरदर्शन पर नियमित रूप से अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करते रहते हैं। उन्होंने प्रतियोगिता में निर्णायक की महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

प्रतियोगिता में कुल 6 भजन मंडलियों ने प्रतिभाग किया: 3 महिला मंडलिया, 2 किशोरी मंडलियाँ एवं 1 पुरुष मंडली। सभी मंडलियों ने समर्पण और भक्ति रस से ओतप्रोत प्रस्तुतियाँ दीं, जिन्हें उपस्थित दर्शकों द्वारा बहुत सराहा गया। हर एक प्रतिभागी के उत्साहवर्धन हेतु उपहार भेंट किए गए। समग्र आयोजन सफल, अनुशासित और अत्यंत प्रेरणादायक रहा।

सहभोज कार्यक्रम

सेवा भारती स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट में 29 नवंबर, दिन शनिवार को सहभोज का कार्यक्रम रखा गया। इसमे समस्त शिक्षिकाएं, कंप्यूटर, सिलाई, सौन्दर्य प्रसाधन, आर्ट एंड क्राफ्ट, जूट, अवम् डांस की सभी बहनों ने भाग लिया। इन सभी को योजना अनुसार चावल, दाल, सब्जी लाने के लिए बोला गया... रोटी सभी से मंगाई गई... संख्या 25 रही। भोजन मंत्र के पश्ताच भोजन प्रारंभ किया गया। खाने के बाद शांति मंत्र करके समाप्त किया गया।

टोडापुर केन्द्र पर स्वास्थ्य जाँच शिविर

सेवा भारती, पटेल नगर जिला, टोडापुर बिहारी कालोनी केन्द्र पर किशोरियों के लिए नि:शुल्क स्वास्थ्य जाँच शिविर आयोजित किया गया। इसमें स्वास्थ्य विभाग से श्रीमती नीना एएनएम द्वारा स्वास्थ्य जांच की गई। शिविर में बीपी, शुगर, आयरन अन्य जांच के साथ दवा वितरित की गई। किशोरियों को स्वास्थ्य से सम्बन्धित जानकारी दी गई। कार्यक्रम में किरण जी, शोभा हांडा जी और निरीक्षिका कांता जी भी उपस्थित रहीं।

संरक्षक
श्रीमती इन्दिरा मोहन

परामर्शदाता
डॉ. राम कुमार

सम्पादक
डॉ. शिवाली अग्रवाल

कार्यालय
सेवाकुंज, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15
E-mail: info@sewabhartidelhi.org
Website: www.sewabhartidelhi.org

पृष्ठ सज्जा
मणिशंकर कुमार

एक प्रति : 20/-रुपये
वार्षिक शुल्क : 200/-रुपये

सेवा समर्पण

वर्ष-43, अंक-03, कुल पृष्ठ-36, दिसम्बर, 2025

विषय-सूची

शीर्षक	लेखक	पृ.
संपादकीय		4
स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट: स्वावलंबन, स्वरोजगार और संस्कृति...	प्रतिनिधि	6
राम हमारे हृदय में हैं	द्वारा संगीता कपूर	10
नारी की पहचान	साध्वी सुनंदा (वीणा प्रकाश)	11
स्वीकार है मुझे	श्वेत कमल	11
गुरु तेग बहादुर की जयंती पर अनेक कार्यक्रम	अंजू पांडेय	12
गुरु तेगबहादुर प्रश्नोत्तरी	प्रदीप, सेवा भारती पंजाब	13
सेवा धाम का वार्षिकोत्सव संपन्न		16
दूरदर्शी नेता और सामाजिक सुधारक	श्वेत कमल	18
'नो मोबाइल डे'	रंजना शर्मा	21
एकदिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण वर्ग	जया श्रीवास्तव	22
विचार से होता है परिवर्तन	रितेश सिंह	23
सुरक्षा का मजबूत कवच	कमलेश त्रिपाठी	24
मोबाइल, सोशल मीडिया के मोहपाश से बचें	द्वारा रंजना शर्मा	25
कर्म की ओर धकेलती है गीता	स्वाती पाठक	29
भजन प्रतियोगिता		31
अन्य गतिविधियां		32
राज्य की वास्तविक सम्पदा	गंगा प्रसाद सुमन	34

पाठकों से अनुरोध

सेवा समर्पण के सुधी पाठकों से अनुरोध है कि वे हर अंक में प्रकाशित लेखों और महापुरुषों के विचारों पर अपनी राय अवश्य भेजें।

पता : संपादक, सेवा समर्पण,
13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001
दूरभाष: 23345014/15, E-mail: info@sewabhartidelhi.org

500 वर्ष से चल रहे यज्ञ की पूर्णाहुति

सनातन धर्म के इतिहास में 25 नवंबर, 2025 को एक और स्वर्णिम पन्ना जुड़ गया। उस दिन अयोध्या में नवनिर्मित श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के शिखर पर भगवा ध्वज चढ़ाया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक माननीय श्री मोहनराव भागवत की गरिमामय उपस्थिति में प्रधानमंत्री ने श्री नरेंद्र मोदी ने जब ध्वज को मंदिर के शिखर पर पहुंचाने की प्रक्रिया पूरी की तो दुनिया का हर हिंदू भावुक हो गया। स्वयं प्रधानमंत्री की आंखें भी गीली हो गईं। उन्होंने कांपते हाथों से ध्वज और प्रभु श्रीराम को प्रणाम किया। जिसने भी यह दृश्य देखा, वह उन लोगों को याद करने लगा, जिन्होंने श्रीराम मंदिर के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी है। इसके साथ ही उन अनगित रामभक्तों को भी याद किया गया, जिन्होंने राम मंदिर बनाने को ही अपना ध्येय बना लिया था। श्री मोहनराव भागवत ने अपने उद्बोधन में राम मंदिर आंदोलन के पुरोधा श्री अशोक सिंहल के साथ अन्य महापुरुषों का भी स्मरण किया।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि यह ध्वज संकल्प सिद्धि का प्रतीक है। उन्होंने यह भी कहा कि आज सदियों के घाव भर गए और वेदना को विराम मिला। उन्होंने यह भी कहा कि ध्वजारोहण के साथ राम मंदिर का निर्माण कार्य पूरा हो गया। आने वाली सदियों और सहस्त्र-शताब्दियों तक, ये धर्मध्वज प्रभु राम के आदर्शों और सिद्धांतों का उद्घोष करेगा। ये धर्मध्वज आह्वान करेगा- सत्यमेव जयते नानृतं! यानी, जीत सत्य की ही होती है, असत्य की नहीं। ये धर्मध्वज उद्घोष करेगा- सत्यम्-एकपदं ब्रह्म सत्ये धर्मः प्रतिष्ठितः। अर्थात्, सत्य ही ब्रह्म का स्वरूप है, सत्य में ही धर्म स्थापित है। ये धर्मध्वज प्रेरणा बनेगा- प्राण जाए पर वचन न जाहीं। अर्थात्, जो कहा जाए, वही किया जाए। ये धर्मध्वज संदेश देगा- कर्म प्रधान विश्व रचि राखा! अर्थात्, विश्व में कर्म और कर्तव्य की प्रधानता हो। ये धर्मध्वज कामना करेगा- बैर न बिग्रह आस न त्रासा। सुखमय ताहि सदा सब आसा यानी, भेदभाव, पीड़ा-परेशानी से मुक्ति, समाज में शांति और सुख हो। ये धर्मध्वज हमें संकल्पित करेगा- नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। यानी, हम ऐसा समाज बनाएं, जहां गरीबी न हो, कोई दुखी या लाचार न हो।

वहीं, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अयोध्याधाम में भगवान राम के भव्य मंदिर पर ध्वजारोहण एक यज्ञ की पूर्णाहुति नहीं, बल्कि एक नए युग का शुभारंभ है। यह भव्य राम मंदिर 140 करोड़ भारतीयों की आस्था, सम्मान और आत्मगौरव का प्रतीक है। इस भव्य मंदिर के निर्माण में योगदान देने वाले उन सभी कर्मयोगियों का भी हृदय से अभिनंदन करता हूं। आज का यह पावन दिन उन पूज्य संतों, योद्धाओं एवं रामभक्तों के संघर्ष को समर्पित है, जिन्होंने इस पूरे आंदोलन के लिए अपना जीवन समर्पित किया।

यह बात तो 100 प्रतिशत सही है कि श्रीराम मंदिर को

विशेष है शिखर ध्वज

राम मन्दिर के शिखर पर लगे 42 फीट ऊंचे ध्वजदंड पर फहराया गया ध्वज पताका भी रामलला की मूर्ति और मन्दिर जैसे ही भव्य और विशेष है। इसे गुजरात के अहमदाबाद शहर की पैराशूट बनाने वाली एक विख्यात कंपनी द्वारा विशेष सामग्री और डिजाइन में निर्मित किया गया है। 22 फीट लम्बे और 11 फीट चौड़े विशेष पैराशूट फैब्रिक और रेशमी धागों से बने केसरिया रंग के ध्वज पर किसी प्रकार की धूप, बारिश और सर्द-गर्म हवाओं का लम्बे समय तक असर नहीं पड़ेगा। जिस ध्वज दंड पर ध्वज लगाया गया है वह बाल बेयरिंग्स वाले चेंबर से जुड़ा है और 360 डिग्री पर घूम सकता है। इस तकनीक के कारण ध्वज दंड हवाओं के थपेड़ों से ध्वज को सुरक्षित करता रहेगा।

समरसता का संदेश

ध्वजारोहण समारोह में धर्माचार्यों, साधु-संतों, विशिष्ट जनों, निषाद समुदाय, सबरी समुदाय के अतिरिक्त मन्दिर निर्माण में सहयोगी रहे लगभग 7,000 लोग ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने। ध्वजारोहण के दिन सुबह से ही अयोध्या की सड़कों से लेकर सरयू तट तक श्रद्धा, आस्था और भक्ति का अनूठा संगम दिख रहा था। जय श्रीराम की जयकारों के बीच बस एक चर्चा कि 'राम मन्दिर कितना जल्दी बन गया।' इसे कोई राम की कृपा बता रहा था तो कोई मोदी और योगी को श्रेय दे रहा है। अयोध्या नगरी की सड़कों, चौराहों, मन्दिरों, ऐतिहासिक स्थलों तथा मन्दिरों को फूलों से सजाया गया था। अनेक स्थानों पर सांस्कृतिक टोलियां रामधुन और भजन गाकर विशेष अवसर का आभास करा रही थीं। मन्दिर निर्माण की पूर्णता का संदेश देने वाले केसरिया धर्म ध्वज पर कोविदार वृक्ष, सूर्य और ओम अंकित किया गया है। कोविदार वृक्ष को श्रीराम के रघुकुल का प्रतीक वृक्ष कहा जाता है जबकि सूर्यवंशी होने के कारण सूर्य के चिन्ह को स्थान दिया गया है। ओम शब्द को सकल ब्रह्मांड का शब्द माना जाता है।

बनवाने में मोदी सरकार का सबसे बड़ा योगदान है। भाजपा कई दशक से हिंदुओं को आश्वासन दे रही थी कि यदि केंद्र में उसकी पूर्ण बहुमत वाली सरकार बनी तो वह श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर बनवाएगी। 2014 में भाजपा की पूर्ण बहुमत की सरकार बनी। इसके बाद उस पर कमंदिर बनवाने का दबाव डाला गया, लेकिन सरकार ने अपने कार्यकाल में कहा कि चूंकि मामला न्यायालय में लंबित है। इसलिए उसका निर्णय आने के बाद ही सरकार कुछ कर सकती है। 2019 के लोकसभा चुनाव से पूर्व स्वयं प्रधानमंत्री ने यह बात कही थी। उस समय उनकी आलोचना भी हुई थी। इसके बाद भी हिंदुओं की एकजुटता ने फिर से 2019 में भाजपा की सरकार बनी। इसके बाद 9 नवंबर, 2019 को सर्वोच्च न्यायालय ने श्रीराम मंदिर के पक्ष में अपना निर्णय दिया। इस निर्णय ने राम मंदिर का मार्ग प्रशस्त किया। भारत सरकार ने 5 फरवरी, 2020 को श्रीराम जन्मभूमि तीर्थक्षेत्र न्यास का गठन कर इसे मंदिर निर्माण का कार्य सौंपा। इस न्यास के अध्यक्ष हैं महंत नृत्य गोपाल दास जी महाराज और सचिव हैं श्री चंपत राय। इसी न्यास ने जन सहयोग से भव्य और दिव्य श्रीराम का निर्माण कराया है।

केवल यह मंदिर नहीं है, बल्कि भारत के भाग्य को बदलने वाला है। इस मंदिर के निर्माण से देश में एक नई ऊर्जा बह रही है। यह ऊर्जा भारत को एक बार फिर से विश्वगुरु बनाने में सहायता करेगी। विश्वास मानिए यदि हम भारतीयों में ऐसी ही एकजुटता और समानता बनी रही, तो आने वाला समय केवल और केवल भारत का होगा। एक ऐसा भारत, जो हर दृष्टि से संपन्न और विश्व का नेतृत्व करने वाला होगा।

इससे पहले श्रीराम मंदिर का शिलान्यास प्रधानमंत्री श्री मोदी ने 5 अगस्त, 2020 को किया था। फिर 22 जनवरी, 2024 को प्रधानमंत्री के करकमलों से ही राम मंदिर में श्री रामलला की मूर्ति की प्राण-प्रतिष्ठा हुई थी।

उस समय मंदिर पूरी तरह नहीं बना था। इस कारण शिखर पर ध्वज नहीं लग पाया था। अब मंदिर बन चुका है और ध्वजारोहण के साथ ही नया अध्याय भी लिखा जा चुका है। सनातन का यह नया अध्याय विकास का है, नवनिर्माण का है, जीवटता का है, परिश्रम का है, लगन का है, बलिदान का है।

केवल यह मंदिर नहीं है, बल्कि भारत के भाग्य को बदलने वाला है। इस मंदिर के निर्माण से देश में एक नई ऊर्जा बह रही है। यह ऊर्जा भारत को एक बार फिर से विश्वगुरु बनाने में सहायता करेगी। विश्वास मानिए यदि हम भारतीयों में ऐसी ही एकजुटता और समानता बनी रही, तो आने वाला समय केवल और केवल भारत का होगा। एक ऐसा भारत, जो हर दृष्टि से संपन्न और विश्व का नेतृत्व करने वाला होगा। यही कोई नया सपना नहीं है, बल्कि पुराना है। इस सपने का पूरा करने के लिए हमारी कई पीढ़ियां खप चुकी हैं। अब हमारी और आपकी बारी है। ❐

'स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट'
स्वावलंबन, स्वरोजगार और संस्कृति का केंद्र

■ प्रतिनिधि

'स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट' नाम सुनते ही लगता है कि यह किसी सरकारी संस्था की परियोजना है। सेवा भारती ने अन्य किसी प्रकल्प का नाम ऐसा नहीं रखा। सचमुच इसका श्रीगणेश एक सरकारी योजना के रूप में ही हुआ था। उन दिनों दिल्ली सरकार ने 'स्लम बस्तियों' तथा पुनर्वास बस्तियों के बालकों के लिए 'स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट' का विज्ञापन दिया। यमुना पार के एक सेवानिवृत्त कर्मचारी श्री जय पाल सिंह सेवा भारती से जुड़े थे, उन्हें यह प्रोजेक्ट मिला। उन दिनों श्री मायाराम पतंग, शाहदरा जिला मंत्री थे। उन्होंने श्री जय पाल सिंह से सम्पर्क किया। योजना को कार्यान्वित करने के लिए उचित स्थान की खोज हम करने लगे। कई बस्तियों में गए। कार्य योग्य बस्ती की तलाश भी करनी थी तथा योजना के संचालन के लिए उचित भवन भी खोजना था।

मानसरोवर पार्क में संघ के एक निष्ठावान कार्यकर्ता थे श्री सत्यप्रकाश कोचर। कोचर जी हम दोनों को साथ लेकर दिलशाद गार्डन गए। वहां हमें मिला तीन झुग्गी बस्तियों- कलन्दर कालोनी, दिलशाद विहार तथा दीपक कालोनी का समूह मिला। वहां पेड़ के नीचे एक सज्जन चार बच्चों को पढ़ा रहे थे। वार्तालाप से ज्ञात हुआ कि वह बेरोजगार हैं। इन बच्चों को थोड़ा सा शुल्क लेकर पढ़ाते हैं और काम ढूंढ रहे हैं। हमने उन्हें सारी योजना बताई। उन्हें बताया कि आपको मानधन सेवा भारती देगी। आपको पढ़ाना तो है, शुल्क नहीं लेना है। उनका नाम था श्री विश्वनाथ। डीडीए की ओर से भवन पास ही बन रहा था। परियोजना हेतु संबंधित अधिकारियों से मिलकर उसे स्वीकृत करा लिया गया। इसका किराया मात्र एक रुपया तय हुआ।

फिर कार्यकर्ताओं ने तीनों बस्तियों में सर्वेक्षण किया। कलन्दर कालोनी में ऐसे परिवार रहते थे जिनका व्यवसाय अन्य बस्तियों में जाकर बन्दर नचाना या जादू दिखाना था। जब हमने उनके बच्चों को पढ़ाने की चर्चा की तो कुछ परिवारों ने यहां तक कहा कि रोजी-रोटी छोड़कर अपने बच्चों को तुम्हारे पास पढ़ने भेजेंगे तो बन्दर क्या तुम्हारा बाप नचाएगा? हम क्या भूखे मरेंगे?

फिर भी सात बच्चों से कार्य शुरू करने में सेवा भारती सफल हुई। यहां बालवाड़ी, बाल संस्कार, बालिका संस्कार एवं सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र शुरू किए गए। धीरे-धीरे संपर्क बढ़ा। बस्ती की ही एक प्रौढ़ महिला मीरा को बस्ती प्रमुख का दायित्व दिया गया। साथ ही उन बच्चों को गायत्री मंत्र, सरस्वती वन्दना, प्रातः स्मरण, राष्ट्रीय गीत एवं कविताएं भी याद कराई गईं। प्रतिदिन प्रार्थना के समय अभ्यास कराया गया। शिक्षक तथा शिक्षिकाओं का प्रशिक्षण भी कराया गया।

स्ट्रीट चिल्ड्रेन अर्थात् जो बच्चे किसी पाठशाला में नहीं जाते। गलियों में खेलते हुए अपना समय नष्ट करते हैं। कूड़ा बीनना और चोरी, झपटमारी करना सीखते हैं तथा बुरे व्यसनों में फंसकर समाज को हानि पहुंचाते हैं। उनको मात्र अक्षर ज्ञान कराने से उद्देश्य पूरा नहीं होता। उन्हें कुछ कमाने के साधन भी सिखाने होते हैं, ताकि वे स्वावलम्बी जीवन जी सकें।

दिलशाद गार्डन का यह केन्द्र सन् 1994 से निरन्तर कार्य कर रहा है। श्री जगदीश मेहता जी के निवास स्थान बदल जाने के पश्चात् इस महान

स्ट्रीट चिल्ड्रेन अर्थात् जो बच्चे किसी पाठशाला में नहीं जाते। गलियों में खेलते हुए अपना समय नष्ट करते हैं। कूड़ा बीनना और चोरी, झपटमारी करना सीखते हैं तथा बुरे व्यसनों में फंसकर समाज को हानि पहुंचाते हैं। उनको मात्र अक्षर ज्ञान कराने से उद्देश्य पूरा नहीं होता। उन्हें कुछ कमाने के साधन भी सिखाने होते हैं, ताकि वे स्वावलम्बी जीवन जी सकें। दिलशाद गार्डन का यह केन्द्र सन् 1994 से निरन्तर कार्य कर रहा है।

परियोजना का कार्य श्री मदन लाल खन्ना जी ने संभाला। खन्ना जी एक कुशल प्रबन्धक, संस्कारित एवं ध्येयनिष्ठ कार्यकर्ता हैं। उन्होंने अनेक प्रकार के कार्य प्रारंभ करके इस प्रोजेक्ट को आगे बढ़ाया।

सरकार बदलने के बाद सरकारी अनुदान मिलना बन्द हो गया। छात्र-छात्राओं को अल्पाहार देना भी बन्द हो गया तो कठिनाई आ गई। किन्तु सेवा भारती के इस विशिष्ट प्रकल्प को बन्द नहीं किया गया, अपितु मानधन तथा अल्पाहार की स्वयं व्यवस्था करके इसे और सफलतापूर्वक चलाया गया। यहां तक कि चित्रा विहार तथा झण्डेवाला में भी इनकी शाखाएं शुरू की थीं। उन्हें बन्द करके दिलशाद गार्डन की इस मूल परियोजना को निरन्तर आगे बढ़ाया गया। समय-समय पर गोकुलपुरी में गड़िया लोहार बस्ती में सम्पर्क बनाया तथा गाजीपुर मण्डी के निकट झुग्गी बस्ती में कार्य प्रारंभ किया जो प्रगति पर है।

आइए अब यह जानें कि यहां कौन-कौन से व्यावसायिक कार्य सिखाए जाते हैं :-

- चॉक बनाना-श्याम पट्ट पर लिखने के चॉक बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है। बने हुए चॉक सेवा भारती के अन्य केन्द्रों द्वारा खरीदे भी जाते हैं।
- मोमबत्ती बनाना- मोमबत्ती बनाने का प्रशिक्षण पाकर उन बच्चों को बहुत लाभ हुआ। दिवाली के अवसर पर कमाने का अच्छा अवसर मिला। मोमबत्ती संस्थाओं तथा दुकानदारों को बेची जाती है।
- जूट बुनाई- जूट से बुनकर बैठने के आसन तथा सजावट का सामान बनाया जाता है।
- सूत की बुनाई- दरी तथा कुर्सी, सोफे के बिछाने के आसन बनाये जाते हैं।
- विद्युत सुधार- बिजली के सामान्य उपकरण ठीक करने का कार्य सीखकर बच्चे कुछ कमाने भी लगे हैं।
- सिलाई-प्रशिक्षण- महिलाओं का सिलाई प्रशिक्षण सम्पर्क का भी अच्छा साधन है तथा स्वावलंबन का भी साधन है। यह प्रकल्प प्रारंभ से ही निरन्तर चल रहा है।
- सौन्दर्य प्रसाधन- सौन्दर्य प्रसाधन भी एक अच्छा व्यवसाय है। अपना कार्य प्रारंभ करना खर्चीला है परन्तु इसे सीखकर बड़ी दुकानों पर खूब काम मिल जाता है।
- मोबाईल रिपेयरिंग- इस कार्य की मांग खूब है। इसे सीखकर कुछ किशोरों ने अपना व्यवसाय शुरू किया है। कुछ बड़ी दुकानों पर काम करने लगे हैं।
- आर्ट एण्ड क्राफ्ट- चित्रकला, पेन्टिंग तथा घरेलू बेकार वस्तुओं से कुछ सुन्दर तथा उपयोगी वस्तु तैयार करना अच्छी कला है। इसमें बालक तथा बालिकाएं सभी रुचि ले रहे हैं।
- कम्प्यूटर प्रशिक्षण- कम्प्यूटर प्रशिक्षण में वे बच्चे सीखने आते हैं, जो आस-पास के विद्यालयों में नौंवी, दसवीं श्रेणी तक पहुंच चुके हैं। कम्प्यूटर सीखकर नौकरी के मार्ग सब तरफ खुल जाते हैं।
- छपाई-कढ़ाई- सूती कपड़ों पर डिजाईन बनाने के लिए

कढ़ाई तथा छपाई का कार्य होता है। कुछ बच्चे डिजायन को तैयार करते हैं जिनसे कपड़ों पर छपाई की जाती है। प्रायः चादर, कवर, तकिए, मेजपोश या गिलाफ छापे जाते हैं।

- संगीत प्रशिक्षण- एक संगीत शिक्षक के द्वारा भजन, राष्ट्रीय गीत तथा सामाजिक लोकगीतों का प्रशिक्षण, बालक-बालिकाओं को दिया जाता है। विशेष आयोजनों के लिए भी ऐसे बच्चे संगीत प्रस्तुत करते हैं। प्रतिभाशाली बच्चे प्रशिक्षण एवं मार्गदर्शन पाकर अच्छे गायक भी बन सकते हैं।

नियमित कार्यक्रम

प्रायः सभी कार्यक्रम अपने अलग समय में सम्पन्न किए जाते हैं। फिर भी गायत्री मंत्र, सरस्वती वंदना, योग व्यायाम, गीत आदि सभी में समान रूप से होते हैं।

मंगलवार को बस्ती के अभिभावकों की बैठक होती है जिसमें बस्ती के प्रमुख परियोजना प्रभारी तथा कुछ कार्यकर्ता भाग लेते हैं। मास में एक बार हवन भी किया जाता है, जिसमें बस्ती के भाई-बहनों को भी आमंत्रित किया जाता है।

'स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट' को सात बच्चों से शुरू करने में सेवा भारती सफल हुई। यहां बालवाड़ी, बाल संस्कार, बालिका संस्कार एवं सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र शुरू किए गए। धीरे-धीरे संपर्क बढ़ा। बस्ती की ही एक प्रौढ़ महिला मीरा को बस्ती प्रमुख का दायित्व दिया गया। साथ ही बच्चों को गायत्री मंत्र, सरस्वती वन्दना, प्रातः स्मरण, राष्ट्रीय गीत एवं कविताएं भी याद कराई गईं। प्रतिदिन प्रार्थना के समय अभ्यास कराया गया। शिक्षक तथा शिक्षिकाओं का प्रशिक्षण भी कराया गया।

शनिवार को शिक्षिका अभ्यास वर्ग होता है तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम किया जाता है।

दूसरे शनिवार को उस मास में जिन बच्चों, शिक्षिकाओं या कार्यकर्ता का जन्मदिन होता है, सब मिलकर मनाते हैं।

पूर्णिमा- प्रत्येक पूर्णिमा को महिलाओं के द्वारा भजन, कीर्तन का आयोजन किया जाता है।

त्योहार मनाने की परम्परा

भारतीय संस्कृति में प्रतिदिन हर तिथि का महत्व होता है। कुछ आवश्यक परम्पराएं इस परियोजना में निश्चित की गई हैं। वर्ष के प्रारंभ में जनवरी में मकर संक्रान्ति तथा गणतंत्र दिवस मनाते हैं। बसन्त पंचमी पर सरस्वती पूजन किया जाता है तथा सामूहिक विवाह के आयोजन में सहयोग करना होता है। स्वतंत्रता दिवस पर ध्वजारोहण होता है तथा राष्ट्रीय गीत गाए जाते हैं। कई दिन पहले से तैयारी की जाती है। रक्षाबंधन पर सभी छात्र-छात्राएं परस्पर राखी बांध ते हैं, कार्यकर्ताओं के साथ जाकर बस्ती में भी अपरिचितों को राम-राम करते हैं

तथा राखी बांध कर परिचय बढ़ाया जाता है।

गणेश उत्सव पर बस्ती के लोगों को गणेश पूजन के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। कन्या पूजन का कार्यक्रम बहुत महत्वपूर्ण है। बस्ती की कन्याएं एकत्र करके अपने कार्यकर्ताओं के घर पूजन के लिए ले जाई जाती हैं। उन्हें भोजन के साथ उपहार भी दिए जाते हैं। दिवाली, दशहरे के आस-पास मेलों के आयोजन होते हैं। परियोजना के लिए कार्यकर्ता जाते हैं। इनमें स्टॉल भी लगाते हैं तथा प्रतियोगिता में भी भाग लेते हैं। सरकार द्वारा आयोजित ऐसे मेलों में चार बार स्ट्रीट चिल्ड्रेन को पुरस्कृत किया गया है।

बस्ती की जनता के साथ मिलकर वाल्मीकि जयन्ती, कबीर जयन्ती तथा सन्त रविदास जयन्ती के उत्सव मनाए जाते हैं। कभी-कभी बस्ती के लोगों के साथ सहभोज का कार्यक्रम भी करते हैं जिसमें क्षेत्र के स्वयंसेवक भी जुड़ते हैं।

हुडको द्वारा प्रत्येक वर्ष आयोजित होने वाली कला प्रतियोगिता इस वर्ष 20 सितंबर, 2025 को इंडिया हेबीटेट सेन्टर, लोधी रोड, नई दिल्ली में आयोजित की गयी। केन्द्र की कोचिंग कक्षा में पढ़ने वाली शीतल ने प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया। गत 8 अक्टूबर 2025 को दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में बच्चों को माननीय केन्द्र राज्य मंत्री (आवास एवं शहरी विकास मंत्रालय) श्री तोखन साहू के द्वारा पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार के रूप में शीतल को 5000/- (पांच हजार रुपए), एक प्रशस्ति पत्र तथा अन्य पुरस्कार प्राप्त हुए।

वर्तमान में इस प्रोजेक्ट को श्री मदन लाल खन्ना एवं श्री ज्ञान प्रकाश कुशलतापूर्वक संभाल रहे हैं। यह परियोजना

सेवा भारती के उद्देश्यों को सफलता की ओर ले तो जा रही है। साथ ही साथ समाज के उपेक्षित वर्ग को मुख्यधारा से निरन्तर जोड़ रही है।

स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट के लक्ष्य

- ऐसे उपेक्षित बच्चों को समाज की मुख्यधारा से जोड़ना, ताकि वे समाज को संभावित हानि न पहुंचाएं।
- उनको शिक्षा तथा संस्कार देकर उनका विकास करना।
- व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर उन्हें स्वावलम्बी तथा सक्षम बनाना।
- उनमें देशभक्ति एवं समाज सेवा की भावना भरकर उन्हें योग्य नागरिक बनाना।
- ऐसे बच्चों में बुद्धि, शक्ति, योग्यता एवं स्वाभिमान का विकास करके सफल व्यक्ति बनाना।
- बच्चों के माध्यम से ऐसे उपेक्षित एवं निर्धन परिवारों से निरन्तर सम्पर्क बढ़ाना, ताकि वे भारतीय संस्कृति से जुड़ें तथा देश के विकास में अपना योगदान दे सकें। ❐

बाँटना भी सीखें

केवल विचार ही नहीं, अपितु हमारे कार्य भी श्रेष्ठ होने चाहिए। अच्छे विचारों का आचरण में उतरना भी अति आवश्यक है, क्योंकि श्रेष्ठ आचरण ही व्यक्ति को महान बनाता है। विचारात्मक प्रवृत्ति रचनात्मक अवश्य होनी चाहिए। शुभ एवं श्रेष्ठ कार्य केवल विचारों तक ही सिमट कर नहीं रह जाने चाहिए, अपितु कार्य रूप में भी परिणत होने चाहिए। जिस दिन शुभ विचार सृजन का रूप ले लेता है, उस दिन परमात्मा का आशीर्वाद भी स्वत: प्राप्त हो जाता है। जीवन में कुछ ऐसे भी संकल्प लें कि जीवन सदाचारी बनकर समाज की उन्नति में सहयोगी बन सके। समाज ने हमें बहुत कुछ दिया अब हमारा संकल्प भी समाज को कुछ देने का होना चाहिए। केवल लेने के लिए नहीं, अपितु समाज को देने के लिए जीने की भावना भी साधना का ही एक रूप है। इस बात का भी सदैव स्मरण रखना चाहिए कि जीवन अस्थायी है, इसलिए सर्वहित में जीवन के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग किया जाए। यहाँ कितना इकट्ठा किया वह नहीं अपितु कितना बाँटा, वह महत्व रखता है।

राम हमारे हृदय में हैं

■ द्वारा संगीता कपूर

एक दिन एक दंपत्ति अपने 10 साल के बच्चे को लेकर डॉक्टर के पास आया। उन्होंने फ़ाइल डॉक्टर साहब की टेबल पर रखी। डॉक्टर ने फ़ाइल देखी और बच्चे की जाँच की। फिर डॉक्टर ने बच्चे से कहा, "बेटा, तुम थोड़ा बाहर बैठो, मैं तुम्हारे मम्मी-पापा से बात करता हूँ।"

माता-पिता बोले, "साहब, उसे सब पता है, इसलिए आप हमारी चर्चा उसी के सामने कर सकते हैं।" डॉक्टर बोले, "मैंने पहली बार ऐसा परिवार देखा है जिनके चेहरे पर डर नहीं है।" उन्होंने कहा, "साहब, शुरू में हम भी बहुत परेशान थे, लेकिन धीरे-धीरे भगवान पर भरोसे और विश्वास से हम तीनों का मनोबल मजबूत होता गया।" डॉक्टर ने कहा, "देखिए, बच्चे के दिल की सर्जरी करनी पड़ेगी। मामला गंभीर है। 50-50 संभावना है। अगर सफल हुआ तो ज़िंदगी भर दिल की तकलीफ़ नहीं होगी, और अगर सफल न हुआ, तो आप समझ ही रहे हैं।"

माता-पिता बोले, "तो हमें क्या करना चाहिए?" डॉक्टर ने कहा, "मेरे अनुसार मरते-मरते जीने से बेहतर है कि एक बार जोखिम उठा लिया जाए।" वे डॉक्टर से सहमत हो गए।

जब उन्होंने डॉक्टर से शुल्क पूछा, तो डॉक्टर बोले, "आम तौर पर मैं एडवांस लेता हूँ, लेकिन आपके केस में ऑपरेशन के बाद बात करेंगे।" और उन्होंने तारीख दे दी। ऑपरेशन के दिन बच्चा और माता-पिता समय पर पहुँचे। किसी के चेहरे पर डर नहीं था। वे बहुत शांत थे। यह केस डॉक्टर के जीवन का एक उदाहरण बन गया। ऑपरेशन थिएटर में बच्चे को टेबल पर लिटाया गया। एनेस्थीसिया देने से पहले डॉक्टर ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए प्यार से पूछा, "बेटा, तुम्हारा नाम क्या है?" बच्चे ने मुस्कुराकर कहा, "आनंद।"

डॉक्टर ने मज़ाक में कहा, "बेटा, तुम्हारे नाम की तरह ही तुम हमेशा आनंद में रहो। ऑपरेशन शुरू करने से पहले कुछ कहना है?" बच्चा बोला, "साहब, दिल क्या होता है?"

डॉक्टर बोले, "बेटा, दिल यानी हृदय, जिसकी सर्जरी आज हम करेंगे।" बच्चा बोला, "साहब, मम्मी-पापा हमेशा कहते हैं कि हर इंसान के दिल में राम रहते हैं।

तो जब आप मेरा दिल खोलें, तो ज़रा देखना कि मेरे अंदर बैठे राम कैसे हैं, फिर मुझे बताना कि वे कैसे दिखते हैं।" डॉक्टर की आँखें भर आई। डॉक्टर ने अपने स्टाफ को पूरा केस पहले ही समझा दिया था, इसलिए सबकी आँखें नम हो गई। डॉक्टर बोले, "हज़ारों ऑपरेशन मैंने किए हैं, लेकिन पता नहीं क्यों, इस बच्चे का ऑपरेशन करते हुए मेरा मन और हाथ काँप रहे हैं।" उन्होंने आँखें बंद कीं और भगवान से प्रार्थना की-

"अब तक मैंने हर ऑपरेशन को पेशे की तरह किया है, पर यह ऑपरेशन श्रद्धा और विश्वास पर आधारित है। मैं तो बस दिल की सर्जरी करता हूँ, पर तू ही उसका सर्जन है।

मेरे इस प्रयास को सफल बना।" यह कहकर उन्होंने ऑपरेशन शुरू किया। ऑपरेशन आगे बढ़ रहा था, सफलता की पूरी संभावना थी, लेकिन अचानक बच्चे का ब्लड प्रेशर गिरने लगा, शरीर ठंडा पड़ने लगा, और अंत में सब शांत हो गया। डॉक्टर की आँखों में आँसू आ गए-

"हे भगवान! तू जीत गया, मैं हार गया।" कहकर उन्होंने थिएटर की सारी लाइटें ऑन कीं और हाथ धोने लगे। तभी अचानक उन्हें बच्चे के शब्द याद आए- "जब मेरा दिल खोलो तो देखना, राम कैसे हैं।" डॉक्टर तुरंत बच्चे के दिल की ओर देखे और ज़ोर से बोले-

"क्या तुम्हें राम दिख रहे हैं?" इतना कहते ही एक अद्भुत चेतना बच्चे के दिल में लौट आई, दिल फिर से धड़कने लगा! पूरा स्टाफ खुशी से चिल्ला उठा- "जय श्री राम!"

ऑपरेशन पूरा हुआ और बच्चा बच गया। डॉक्टर ने फीस नहीं ली और कहा -

"हज़ारों ऑपरेशन किए, पर कभी यह नहीं सोचा कि राम कहाँ हैं?

इस बच्चे ने आज मुझे दिखा दिया कि राम हमारे दिल में रहते हैं।" जब हम अपनी बुद्धि के दरवाज़े बंद करते हैं, तब भगवान अपने दरवाज़े खोलता है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया। ❐

नारी की पहचान

– साध्वी सुनंदा (वीणा प्रकाश)

हे नारी तू पृथ्वी सी महान है
जीवन की आधारशिला है
सृष्टि की महान देवी है
ईश्वर के बाद तू ही प्रेरणा है

सोलह संस्कारों की कर्ता है
तेरे बिना यह संसार अधूरा है
मानव को बनाने वाली माता है
सभी का जीवन तेरे पर आधारित है

कष्ट सहकर भी सभी को सहती है
;षि मुनि महापुरुष सभी को बनाती है
गार्गी सी विद्वान और धर्मात्मा है
राम और कृष्ण को तू बनाने वाली है

नारी तू स्वयं को जानती है
कि मैं कितनी महान व्यक्तित्व वाली है
आज कल सभी महापुरुष तेरे गुणगान करते हैं
हे महान नारी आज तुझे क्या हो गया है

क्यों तूने सतयुग को कलयुग में बदल दिया है
जाग नारी जाग पूरा संसार भ्रष्ट हो रहा है
महापुरुषों की जगह राक्षसों का निर्माण हो रहा है
इस धरती पर अत्याचार ही हो रहे हैं

स्वयं पथ से क्यों भ्रष्ट हो रही है
ईश्वर हर समय तुझे ही निहार रहा है
सभी जगह सत्य ज्ञान की गंगा बहा देने वाली है
अज्ञान और पाखंडों को दूर कर देने वाली माता है

तुझे क्या करना था और क्या कर दिया है
अपने गुणों से खिलवाड़ मत कर तू
सबसे ऊपर है अपनी ही शक्ति से
सभी बुराइयों को दूर कर देने वाली दुर्गा माता है। ❐

स्वीकार है मुझे

– श्वेत कमल

सनातनी हिंदुत्व है गौरव मेरा,
और यह गरिमा सहृदय स्वीकार है मुझे,
हां, बहुदेववादी आस्था है मेरी,
और यह संबोधन सहर्ष, अंगीकार है मुझे।

ये हजारों फूल और लाखों ये पत्ते,
ये कमल, गुलाब, ये बेला चमेली,
ये आम से लेकर, नीम के,
बरगद के और पीपल के पत्ते,
ये नदियां की लहरों में,
गंगा और जमुना का, कृष्णा-कावेरी का,
शिप्रा संग, नर्मदा- नर्मदेश्वर का पूजन परिभ्रमण,
गिरिराज जी का भक्तिमय, दंडवत परिक्रमण,
ये पूजन, ये वंदन,
ये चंदन सी माटी और माटी का पूजन,
ये पूजा की शैली, ये सात्विक-सा भोजन,
सर्प से लेकर, गोवंश तक के पूजन-अर्चन का,
सार्वभौमिक, अधिकार है मुझे।

सनातनी हिंदुत्व है गौरव मेरा,
और यह गरिमा सहृदय स्वीकार है मुझे,
हां, बहुदेववादी आस्था है मेरी,
और यह संबोधन सहर्ष, अंगीकार है मुझे।

चल हो, अचल हो या निराकार एवं साकार हो,
लघु से लेकर दीर्घ तक का विस्तार हो,
तंत्र मंत्र हो या यंत्र साधना,
मौन हो या सघोष आराधना,
प्रकृति का हर वंदन,
प्रकृति के वंदन का हर सनातनी प्रबंधन,
स्वीकार है मुझे। ❐

गुरु तेग बहादुर की जयंती पर अनेक कार्यक्रम

■ अंजू पांडेय

गुरु तेग बहादुर जी सिखों के नौवें गुरु थे, उनकी शहादत सर्वविदित है। ऐसा बलिदान विश्व के इतिहास में इससे पहले ना कभी हुआ था और ना ही होगा।

जिन्होंने धार्मिक चिन्हों की रक्षा, धर्म की स्वतंत्रता, स्वाभिमान तथा राष्ट्र के मान हेतु आने वाले समय के लिए नई परिभाषा लिख डाली। तेग बहादुर जी का मानना था कि परिवार को त्यागना आसान है किंतु परिवार के साथ रहते हुए उससे विरक्त होकर रहना और धर्म के मार्ग पर चलना कठिन है, हमें परमात्मा को ढूंढने के लिए किसी जंगल या कंदराओं में जाने की आवश्यकता नहीं, बल्कि परमात्मा तो हमारे अंदर ही रहता है। तेग बहादुर जी ने ऐसे कठिन मार्ग पर चलकर लोगों के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया।

प्राय: मनुष्य अपने जीवन के सत्य से घबराता है, उसकी दुर्बलताएं अनुकूल परिस्थितियों में उत्साहित करती हैं, जबकि प्रतिकूल परिस्थितियों में हतोत्साहित या निराश करती हैं। उनका कहना था कि जब तक जीवन की विसंगतियों को साहसपूर्वक चुनौती के रूप में स्वीकार नहीं किया जाएगा तब तक उन समस्याओं का समाधान ढूंढ पाना संभव नहीं। धर्म उनके लिए सांस्कृतिक मूल्यों व जीवन विधान का नाम था। इसलिए धर्म के लिए उनका बलि चढ़ जाना एक परम साहसिक अभियान था जो हमें अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिए प्रेरित करता है। सन् 1675 में गुरु तेग बहादुर जी ने अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। यही कारण है कि केवल सिख समुदाय ही नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए यह दिन बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है।

समाज ऐसे वीर पुरुष को स्मरण करते हुए सदा से नमन करता रहा है। उनकी शहादत की याद में हर भारतवासी अपने अनुसार इस दिन को मनाता है। इस विषय को ध्यान में रखते हुए प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी मंगलवार दिनांक 25 नवंबर 2025 को गुरु तेग बहादुर जी का 350 वां शहादत दिवस सेवा भारती के प्रत्येक केंद्र में मनाया गया। जिसमें बहुत सी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। बाल संस्कार, सिलाई, किशोरी विकास तथा कंप्यूटर के सभी छात्र-छात्राओं ने 25 नवंबर को वीर रस की कविता, निबंध, चित्रकला, सुलेख, पाठन आदि तथा प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के माध्यम से याद किया।

वेदमूर्ति देवव्रत

महाराष्ट्र के अहिल्यानगर के युवा देवव्रत महेश रेखे ने मात्र 19 वर्ष की आयु में ऐसा अद्भुत कार्य कर दिखाया है, जिसे सुनकर हर सनातनी का हृदय गर्व से भर उठे। उन्होंने दण्डक्रम वेद पारायण के अंतर्गत 25 लाख से अधिक वेद पदों का लगातार 50 दिन तक बिना किसी ग्रंथ के सहारे, बिना एक भी त्रुटि, उच्चारण कर उन्होंने सनातन वेद परंपरा की ध्वजा और भी ऊँची कर दी है। उनकी वाणी में तप है, साधना है और अप्रतिम दिव्यता का तेज है।

ऐसी अलौकिक प्रतिभा सदियों में कभी-कभार जन्म लेती है। देवव्रत जी को हृदय से साधुवाद।

अभिनंदन! अभिनंदन!

गुरु तेगबहादुर प्रश्नोत्तरी

■ **प्रदीप**, सेवा भारती पंजाब

प्र. गुरु तेगबहादुर जी के पिता जी का क्या नाम था?
उ. गुरु हरगोबिंद साहिब जी
प्र. गुरु तेगबहादुर जी की माता का क्या नाम था?
उ. माता नानकी
प्र. इनके बचपन का क्या नाम था?
उ. त्यागमल जी
प्र. गुरु जी अपने पिता के कौन से पुत्र थे?
उ. पाँचवें
प्र. गुरु तेगबहादुर जी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
उ. गुरु तेगबहादुर जी का जन्म वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की पञ्चमी संवत् 1,678 (1 अप्रैल, सन् 1621) को पंजाब प्रांत के बंगा में हुआ था।
प्र. गुरु तेगबहादुर जी का कितने वर्ष की आयु में विवाह हुआ था?
उ. 1632 में 11 वर्ष की आयु में।
प्र. इनका विवाह किसके साथ हुआ था?
उ. माता गुजरी से।
प्र. गुरु जी बकाला गाँव में कब, किसके साथ और कितने वर्ष रहे?
उ. 1644 में गुरु तेगबहादुर अपनी पत्नी तथा माँ के साथ 2 वर्ष तक बकाला गाँव में रहे।
प्र. गुरु जी ने बकाला गाँव में अधिकतर समय कैसे और कहाँ बिताया?
उ. बकाला गाँव में गुरु जी भूमिगत कमरे में ध्यान करते हुए अधिकतर समय बिताया।
प्र. धर्म का प्रचार श्रीगुरु जी ने एक स्थान पर किया या घूम-घूमकर करते रहे?
उ. धर्म प्रचार के लिए गुरु जी ने अनेक स्थानों की यात्रा की।
प्र. गुरु जी ने आनन्दपुर, रोपण, सैफाबाद और खिआला पहुँच कर क्या किया?
उ. आनन्दपुर से किरतपुर, रोपण, सैफाबाद से होकर खिआला यानी खदल पहुँच कर धर्म उपदेश दिया।
प्र. गुरु जी दमदमा साहब से कड़ामानकपुर कैसे पहुँचे?

उ. गुरु जी दमदमा साहब से कुरुक्षेत्र वहाँ से यमुना किनारे से होकर कड़ामानकपुर पहुँचे।
प्र. गुरु जी ने कड़ामानकपुर पहुँच कर क्या किया?
उ. कड़ामानकपुर पहुँच कर उन्होंने साधु भाई मलूक दास जी का उद्धार किया।
प्र. गुरु जी ने धर्म प्रचार हेतु कौन से क्षेत्रों की यात्राएँ कीं?
उ. धर्म प्रचार हेतु उन्होंने प्रयाग, बनारस, पटना, असम आदि क्षेत्रों में यात्राएँ की।
प्र. गुरु जी के धर्म प्रचार हेतु यात्राओं में और कौन से कार्य सम्मिलित थे?
उ. उनके द्वारा की गई यात्राओं में आध्यात्मिक, सामाजिक एवं आर्थिक उन्नत के लिए रचनात्मक कार्य भी सम्मिलित थे।
प्र. उन्होंने मानव कल्याण हेतु क्या-क्या कार्य किये?
उ. उन्होंने मानव कल्याण हेतु कुएँ खुदवाना, धर्मशालाएँ

बनवाना आदि जन परोपकार के लिए कार्य भी किये।

प्र. गुरु जी को पुत्र धन की प्राप्ति कहाँ हुई और वह बड़े होकर किस नाम से जाने गये?

उ. गुरु जी को पटना साहिब में पुत्र धन की प्राप्ति हुई। गुरु जी का यही पुत्र आगे चलकर गुरु गोविंद सिंह जी के नाम से जाने गये।

प्र. गुरु जी की अधिकतर रचनाएँ 'गुरु ग्रंथ साहब' के कौन से महला में संग्रहित हैं?

उ. गुरु तेगबहादुर जी की बहुत सी रचनाएँ गुरु ग्रंथ साहब के महला 9 में संग्रहित हैं।

प्र. उन्होंने लोगों को जीवन जीने का कैसा रास्ता दिखाया?

उ. उन्होंने लोगों को स्वतंत्र एवं निर्भरता के साथ जीवन जीने का रास्ता दिखाया।

प्र. उनके पिता की मृत्यु के समय कितने भाई जीवित थे?

उ. जब उनके पिता की मृत्यु हुई तब दो भाई ही जीवित थे।

प्र. गुरु जी ने कितने वर्ष तपस्या की थी?

उ. उन्होंने 20 वर्ष तक तपस्या की।

प्र. ये गुरु गद्दी पर कब बैठे?

उ. 1,664 में गुरु गद्दी पर बैठे।

प्र. गुरु जी ने 1675 में अपने कौन से तीन शिष्यों सहित बलिदान दिया?

उ. 1675 में अपने तीन शिष्यों (मति दास, सति दास एवं भाई दयाला जी) सहित मानवीय, सांस्कृतिक मूल्यों एवं धर्म की रक्षार्थ बलिदान दिया।

प्र. गुरु जी ने कितने वर्ष की आयु में मुग़लों के हमले के विरुद्ध अपनी वीरता का परिचय दिया?

उ. केवल 14 वर्ष की आयु में मुग़लों के हमले के विरुद्ध युद्ध में अपनी वीरता का परिचय दिया।

प्र. इनकी वीरता के कारण इनके पिता ने इनका क्या नाम रखा?

उ. इनकी वीरता के कारण ही इनके पिता ने इनका नाम त्यागमल से तेगबहादुर रख दिया था।

प्र. तेगबहादुर का क्या अर्थ है?

उ. तेगबहादुर यानी तलवार का धनी (बहादुर)।

प्र. गुरु तेगबहादुर के पिता गुरु हर गोबिंद जी सिख पंथ के कौन से गुरु थे?

उ. गुरु तेगबहादुर जी के पिता गुरु हर गोबिंद जी सिख पंथ के छठवें गुरु थे।

प्र. गुरु तेगबहादुर जी द्वारा लिखित कितने काव्यात्मक भजन 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संग्रहित हैं?

उ. उनके 116 काव्यात्मक भजन गुरु ग्रंथ साहिब में संग्रहित हैं।

प्र. गुरु जी ने किस भाषा में 'पदों' और 'साखी' की रचनाएँ कीं?

उ. गुरु तेगबहादुर जी ने शुद्ध हिन्दी में सरल और भावयुक्त पदों और साखी की रचनाएँ कीं।

प्र. गुरु जी द्वारा रचित बाणी कितने रागों में संग्रहित हैं?

उ. गुरु तेगबहादुर जी द्वारा रचित बाणी 15 रागों में श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संग्रहित हैं।

प्र. गुरु जी ने पंजाब में किस शहर की स्थापना की थी और वह बाद में किस स्थान का हिस्सा बन गया?

उ. उन्होंने पंजाब में चाक-नानकी नामक शहर की स्थापना की, जो बाद में यह आनन्दपुर साहिब का हिस्सा बन गया।

प्र. गुरु जी सिख पंथ के कौन से गुरु थे?

उ. गुरु तेगबहादुर जी सिख पंथ के नौवें गुरु थे।

प्र. गुरु तेगबहादुर जी किस नाम से विख्यात हुए?

उ. गुरु तेगबहादुर जी 'हिन्द की चादर' के नाम से विख्यात हैं।

प्र. गुरु जी एक महान शिक्षक के अतिरिक्त और क्या थे?

उ. गुरु तेगबहादुर जी एक महान शिक्षक के अतिरिक्त एक उत्कृष्ट योद्धा, विचारक और कवि भी थे।

प्र. गुरु जी ने जहाँ अपना बलिदान दिया उस स्थान पर अब क्या है?

उ. गुरु तेगबहादुर जी ने धर्म और मानवीय मूल्यों की रक्षा हेतु जहाँ पर अपना शीश कटवा कर बलिदान दिया था आज उस स्थान पर शीशगंज गुरुद्वारा है।

प्र. गुरु जी ने घुड़सवारी और तीरंदाजी की शिक्षा किनसे प्राप्त की थी?

उ. गुरु तेगबहादुर जी ने घुड़सवारी और तीरंदाजी की शिक्षा बाबा बुद्ध जी द्वारा प्राप्त की थी।

प्र. गुरु जी बाल्यकाल में कैसे थे?

उ. गुरु तेगबहादुर जी बाल्यकाल से ही संत स्वरूप, गहन विचारक, उदार चित्त, बहादुर एवं निर्भीक स्वभाव के थे।

प्र. गुरु जी ने उनका अहित करने वाले लोगों को कैसे परास्त किया?

उ. उन्होंने अपनी सहनशीलता, मधुरता और सौम्यता से ऐसे लोगों को परास्त कर दिया।

प्र. गुरु जी के जीवन का प्रथम दर्शन क्या था?

उ. उनके जीवन का प्रथम दर्शन यही था कि केवल धर्म का मार्ग ही सत्य और विजय का मार्ग है।

प्र. गुरु जी और उनके तीनों शिष्यों सहित बलिदान से पूर्व औरंगजेब ने कैसा बर्ताव किया?

उ. गुरु जी व उनके शिष्य (भाई मतिदास, भाई सतीदास, भाई दयाल दास) को उनके बलिदान से पूर्व क्रूर औरंगजेब ने पानी तक नहीं दिया था।

प्र. गुरु जी अत्याचारी औरंगजेब के सामने क्या करते रहे?

उ. गुरु जी अत्याचारी औरंगजेब के सामने नहीं झुके और अपने शिष्यों के अद्‌भुत बलिदान का गुणगान करते रहे।

प्र. गुरु जी के बलिदान का इतिहास में कैसा स्थान है?

उ. विश्व इतिहास में धर्म, मानवीय मूल्यों, आदर्शों एवं सिद्धांतों की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति देने वालों में गुरु तेगबहादुर जी का स्थान अद्वितीय है।

प्र. गुरु जी का बलिदान कहाँ और कैसे हुआ?

उ. दिल्ली के चाँदनी चौक में काज़ी ने फतवा पढ़ा और जल्लाद जलालदीन ने तलवार से गुरु साहिब का शीश धड़ से अलग कर दिया, किन्तु गुरु तेगबहादुर ने अपने मुँह से सी तक नहीं कहा।

प्र. गुरु गोविंद सिंह जी ने उनके बलिदान के विषय में कौन से नाटक में लिखा और क्या लिखा?

उ. बिचित्र नाटक में लिखा है –

तिलक जंञू राखा प्रभ ताका।
कीनो बडो कलू महि साका।
साधन हेति इति जिनि करी।
सीसु दीया परु सी न उचरी।
धरम हेत साका जिनि कीआ।
सीसु दीआ परु सिररु न दीआ। ❐

चलती ट्रेन में छलांग लगा दी

संसार का स्वाधीनता संग्राम का इतिहास उठाकर देख लीजिए कि उन्नीसवीं, बीसवीं शताब्दी में भारत ने अपने स्वाधीनता संघर्ष में जितने विश्व प्रसिद्ध सेनानी, क्रान्तिवीर, शहीद, हुतात्मा, महात्मा, दार्शनिक, कवि और वैज्ञानिक पैदा किए हैं, उतने विश्व के किसी अन्य देश में नहीं। रक्त-साक्षी पं. लेखराम इसी युग की महान विभूति थे।

धर्मधुरी, वैदिक धर्मध्वजा वाहक पं. लेखराम को एक बार सूचना मिली कि रोपड़ के पास दोराहा, चावा पायल में कुछ हिन्दू परिवार मुसलमान होने जा रहे हैं। वे जानते थे कि इस समय का एक क्षण का विलम्ब भी इतिहास बदल सकता है। बीच में भोजन त्यागकर उठ खड़े हुए और तुरन्त अपना बिसतर बांधा और लाहौर से चल दिए। दोराहा का टिकट खदीदा और अपने इष्ट लक्ष्य की ओर बढ़ चले।

जब दोराहा का स्टेशन आने लगा तो सह-यात्रियों ने बताया कि यह तो मूल गाड़ी है, दोराहा छोटा स्टेशन है, यह गाड़ी यहां पर नहीं रुकेगी, लेकिन पंडित जी ने दोराहा उतरने का निश्चय कर लिया था। वे पल भर का भी विलम्ब न नहीं चाहते थे। उन्हें चिता थी उन अबोध भाइयों की जो विधर्मी होने जा रहे थे।

संकल्प के धनी पंडित लेखराम ने अपना बिस्तर छाती से बांधा और चलती रेलगाड़ी से दोराहा स्टेशन पर छलांग लगा दी। चोटें लगी, रक्त बहने लगा, शरीर क्षत-विक्षत हो गया, लेकिन आपके मुंह से आह का एक शब्द भी न निकला। गांव के लोगों को जब सूचना मिली तो सारा गांव उनके स्वागत में उमड़ पड़ा। रक्त से लथपथ हुए पंडित जी के प्रति दया, स्नेह, कृतज्ञता और आभार का भाव गांव वालों में जागृत हुआ। जो हिन्दू विधर्मी बनने जा रहे थे, उनके मन में स्वत: ही भाव जागृत हुआ कि हमारे कारण ही पंडित जी लहूलुहान हुए हैं। सारे गांव में ऐसा मार्मिक प्रभाव पड़ा कि एक भी हिन्दू अपने धर्म से च्युत नहीं हुआ। पंडित जी की साध पूरी हुई। सेवा से पराए भी अपने हो जाते हैं।

ऐसी ही घटनाओं से जातियों, संस्थाओं व राष्ट्रों के इतिहास का निर्माण होता है। इतिहास के पन्नों से यदि त्याग, बलिदान, समर्पण की घटनाएं निकाल दी जाएं तो अपने वाली पीढ़ी के हृदयों में, भला अग्नि कहां धधकने पाएगी? ❐

सेवा धाम का वार्षिकोत्सव संपन्न

गत दिनों सेवा भारती सेवाधाम विद्या मंदिर आवासीय विद्यालय में 37 वां वार्षिक उत्सव धूमधाम से मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती और भारत माता के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। विद्यालय का वृत्त विद्यालय के प्रबंधक श्री ओंकारनाथ मिश्र ने रखा। समारोह को राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग, भारत सरकार के अध्यक्ष श्री किशोर मकवाणा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, दिल्ली प्रांत के प्रांत कार्यवाह श्री अनिल गुप्ता और सेवा भारती के अध्यक्ष श्री रमेश अग्रवाल ने संबोधित किया। कार्यक्रम में श्री नंदकिशोर गुर्जर, विधायक, लोनी विधानसभा गाजियाबाद, श्री सुदीप जी, डायरेक्टर द हंस फाउंडेशन और विद्यालय के भूमिदाता स्वर्गीय जसवंत राय अरोड़ा जी (पूज्य बाबू जी) के सुपुत्र श्री पंकज राय अरोड़ा जी भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं दिल्ली की मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ता, लेकिन किन्हीं कारणों से वह नहीं आ पाईं। इसलिए कार्यक्रम में उनका वीडियो संदेश सुनाया गया। इसमें श्रीमती रेखा गुप्ता ने

कहा कि सेवा भारती समाज के असहाय वर्ग के छात्रों को शिक्षा देकर के राष्ट्रहित में सामाजिक कार्य कर रहा है, जो बहुत ही सराहनीय है। श्री नंदकिशोर गुर्जर विधायक लोनी ने कहा कि विद्यालय में जिस भी प्रकार के विकास कार्य करने की आवश्यकता हो, हम तन मन धन से सहयोग देने के लिए तैयार हैं। सेवाधाम समाज के आदिवासी, अनुसूचित जाति व गरीब बच्चों के लिए शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहा है, जो बहुत ही सराहनीय कार्य है। धन्यवाद ज्ञापन श्री तरुण गुप्ता, अध्यक्ष, सेवा भारती सेवाधाम विद्या मंदिर ने किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री विमल कुमार सिंह , सह प्रबंधिका श्रीमती रेखा गर्ग, सह प्रबंधक डॉ. एसपी सिंह ने आये हुए अतिथियों का पटका, माला पहनाकर, स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया।

विद्यालय के छात्रों द्वारा नशा मुक्ति पर नुक्कड़ नाटक, हरियाणा नृत्य, घोष, प्रदर्शनी की प्रस्तुति की गयी। सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति के रूप में वाद्य यंत्र प्रस्तुति, सामूहिक गीत, सरस्वती वंदना, बिरसा मुंडा पर आधारित नाटक, गणेश वंदना, श्री कृष्ण अर्जुन संवाद नाटिका, टूटनिक नृत्य, फ्यूजन नृत्य, ऑपरेशन सिंदूर नाटक, डम्बल नृत्य, योगासन प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम का संचालन विद्यालय की ओर से छात्र प्रथम गुप्ता, रूपेश और प्रबंध समिति से श्रीमान अजय कुमार शर्मा जी ने किया। आए हुए दानदाताओं के नामों की घोषणा भी की गई। कार्यक्रम में 600 से अधिक लोग शामिल हुए। इनमें क्षेत्र के स्थानीय निवासी, प्रतिष्ठानों के प्रमुख, लोनी ग्रामीण क्षेत्र के वरिष्ठ एवं प्रभावी नागरिक आदि सम्मिलित थे। सभी दानदाताओं ने कार्यक्रम की हृदय से प्रशंसा की। प्रधानाचार्य विमल कुमार सिंह जी के कुशल नेतृत्व में शिक्षक गण एवं छात्रों के सामूहिक परिश्रम से कार्यक्रम पूर्ण सफल रहा। कार्यक्रम का समापन राष्ट्र गान से हुआ। सभी अतिथियों ने कार्यक्रम के समापन के बाद भोजन प्रसाद के रूप में ग्रहण किया। ❐

भारतरत्न अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिवस (25 दिसंबर) पर विशेष

दूरदर्शी नेता और सामाजिक सुधारक

■ श्वेत कमल

अटल बिहारी वाजपेयी एक ऐसे भारतीय राजनेता,कवि और लेखन में प्रख्यात, कालजयी अवधूत महापुरुष थे, जिन्होंने तीन बार भारत के प्रधानमंत्री के रूप में अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दिया और वे भारतीय जनता पार्टी के एक ऐसे समर्पित, कर्मठ नेता थे, जिन्होंने 1996, 1998-1999, और 1999-2004 के दौरान प्रधानमंत्री रहे। उनके उल्लेखनीय, समर्पित योगदान के लिए उन्हें भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान, भारत रत्न से सम्मानित किया गया था।

जन्म और मृत्युः 25 दिसंबर 1924 को जन्म और 16 अगस्त 2018 को निधन।

प्रारंभिक परिचयः श्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर, 1924 को मध्य प्रदेश के ग्वालियर में रहने वाले एक साधारण शिक्षक परिवार में हुआ था।

छात्र जीवन और उनकी उपलब्धियां

1. श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी अपने छात्र जीवन के दौरान पहली बार राष्ट्रीय राजनीति में तब आये, जब उन्होंने वर्ष 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया।
2. वह राजनीति विज्ञान और विधि के छात्र थे और कॉलेज के दिनों में ही उनकी रुचि विदेशी मामलों के प्रति बढ़ी। उनकी यह रुचि आगे आने वाले कई वर्षों तक बनी रही एवं विभिन्न बहुपक्षीय और द्विपक्षीय मंचों पर भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए उन्होंने अपने इस कौशल का परिचय दिया।
3. श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने अपना सामाजिक जीवन एक पत्रकार के रूप में शुरू किया और 1951 में भारतीय जन संघ में शामिल होने के बाद उन्होंने पत्रकारिता छोड़ दी।
4. आज की भारतीय जनता पार्टी को पहले भारतीय जन संघ के नाम से जाना जाता था जो राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन का अभिन्न अंग है।
5. उन्होंने कई कवितायेँ भी लिखीं, जिन्हें समीक्षकों द्वारा सराहा गया। वह राजनीतिक मामलों से समय निकालकर संगीत सुनने और खाना बनाने जैसे अपने शौक पूरे करते थे।

राजनीतिक भूमिका

1. श्री अटल बिहारी वाजपेयी प्रधानमंत्री पद पर पहुँचने वाले

मध्य प्रदेश के प्रथम व्यक्ति थे। वे तीन बार भारत के प्रधान मंत्री बने।

2. वे भारतीय जनसंघ की स्थापना करने वालों में से एक थे और सन् 1967 से 1973 तक वह उसके राष्ट्रीय अध्यक्ष भी रह चुके थे
3. सन् 1952 में उन्होंने पहली बार लोकसभा चुनाव लड़ा, परन्तु सफलता नहीं मिली। लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और सन् 1957 में बलरामपुर (जिला गोण्डा, उत्तर प्रदेश) से जनसंघ के प्रत्याशी के रूप में विजयी होकर लोकसभा में पहुँचे।
4. वे लोकसभा और राज्यसभा दोनों में कई बार सांसद चुने गए। सन् 1957 से 1977 तक जनता पार्टी की स्थापना तक वे बीस वर्ष तक लगातार जनसंघ के संसदीय दल के नेता रहे।
5. मोरारजी देसाई की सरकार में सन् 1977 से 1979 तक विदेश मंत्री रहे और विदेशों में भारत की छवि को सुदृढ बनाने में निर्णायक भूमिका निभाई।
6. 1980 में जनता पार्टी से असन्तुष्ट होकर इन्होंने जनता पार्टी छोड़ दी और भारतीय जनता पार्टी की स्थापना की। 6 अप्रैल, 1980 में बनी भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष पद का दायित्व भी वाजपेयी को सौंपा गया।
7. राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के पहले प्रधानमंत्री थे, जिन्होंने गैर-कांग्रेसी प्रधानमंत्री के रूप में अपना 5 साल का कार्यकाल पूरा किया।
8. लोकतंत्र के सजग प्रहरी अटल बिहारी वाजपेयी जी ने सन् 1996 में प्रधानमंत्री के रूप में देश की बागडोर सम्भाली।
9. 19 अप्रैल, 1997 को पुन: प्रधानमंत्री पद की शपथ ली और उनके नेतृत्व में 13 दलों की गठबन्धन सरकार ने पाँच वर्ष में देश के अन्दर प्रगति के अनेकानेक बहुआयामी लक्ष्यों को प्राप्त किया।
10. सन् 2004 में लोकसभा चुनावों में भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन की हार हुई और वाजपेयी जी पद से हट गए।

उपलब्धियाँ

1. जनता के बीच अटल बिहारी वाजपेयी जी अपनी राजनीतिक प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते थे।
2. पंडित जवाहर लाल नेहरू के बाद वह पहले ऐसे प्रधानमंत्री बने जो लगातार दो बार प्रधानमंत्री बने।
3. उन्होंने 24 दलों के गठबन्धन से सरकार बनाई थी जिसमें 81 मंत्री थे।
4. वरिष्ठ सांसद श्री वाजपेयी जी राजनीति के क्षेत्र में चार दशक तक सक्रिय रहे। वह लोकसभा में नौ बार और राज्य सभा में दो बार चुने गए जो अपने आप में ही एक कीर्तिमान है।
5. भारत के प्रधानमंत्री, विदेश मंत्री, संसद की विभिन्न महत्वपूर्ण स्थायी समितियों के अध्यक्ष और विपक्ष के नेता के रूप में उन्होंने आजादी के बाद भारत की घरेलू और विदेश नीति को आकार देने में एक सक्रिय भूमिका निभाई।
6. महिलाओं के सशक्तिकरण और सामाजिक समानता और समरसता के समर्थक श्री वाजपेयी भारत को सभी राष्ट्रों के बीच एक दूरदर्शी, विकसित, मजबूत और समृद्ध राष्ट्र के रूप में आगे बढ़ते हुए देखना चाहते थे।
7. वह ऐसे भारत का प्रतिनिधित्व करते थे जिसकी सभ्यता का इतिहास 5000 वर्ष पुराना है और जो अगले हज़ार वर्षों में आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार है।
8. 1994 में उन्हें भारत का 'सर्वश्रेष्ठ सांसद' चुना गया। अटल जी जनता की बातों को ध्यान से सुनते थे और उनकी आकाँक्षाओं को पूरा करने का प्रयास करते थे। उनके कार्य राष्ट्र के प्रति उनके समर्पण को दिखाते हैं।

अन्य उपलब्धियाँ

1. एक कवि और प्रखर वक्ता के रूप में भी जाने जाते थे।
2. उन्होंने 'राष्ट्रधर्म', 'पाञ्चजन्य' और 'वीर अर्जुन' जैसी राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया।
3. उन्हें "भीष्मपितामह" भी कहा जाता है, क्योंकि वे आजीवन अविवाहित रहे।
4. मेरी इक्यावन कविताएँ कवि व राजनेता अटल बिहारी वाजपेयी का बहुचर्चित काव्य-संग्रह है जिसका लोकार्पण 13 अक्टूबर 1995 को नई दिल्ली में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री पी० वी० नरसिंहराव ने सुप्रसिद्ध कवि शिवमंगल सिंह 'सुमन' की उपस्थिति में किया था।

परमाणु परीक्षण

1. अटल सरकार ने 11 और 13 मई 1998 को पोखरण में पाँच भूमिगत परमाणु परीक्षण विस्फोट करके भारत को परमाणु शक्ति सम्पन्न देश घोषित कर दिया।
2. इस कदम से उन्होंने भारत को निर्विवाद रूप से विश्व मानचित्र पर एक सुदृढ वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित

कर दिया।

3. यह सब इतनी गोपनीयता से किया गया कि अति विकसित जासूसी उपग्रहों व तकनीक से सम्पन्न पश्चिमी देशों को इसकी भनक तक नहीं लगी।
4. यही नहीं इसके बाद पश्चिमी देशों द्वारा भारत पर अनेक प्रतिबन्ध लगाए गए लेकिन वाजपेयी सरकार ने सबका दृढ़तापूर्वक सामना करते हुए आर्थिक विकास की ऊँचाईयों को छुआ।

पाकिस्तान से सम्बन्धों में सुधार की पहल

1. 19 फरवरी 1999 को सदा-ए-सरहद नाम से दिल्ली से लाहौर तक बस सेवा शुरू की गई।
2. इस सेवा का उद्घाटन करते हुए प्रथम यात्री के रूप में वाजपेयी जी ने पाकिस्तान की यात्रा करके नवाज़ शरीफ से मुलाकात की और आपसी सम्बन्धों में एक नयी शुरुआत की।

कारगिल युद्ध

1. परन्तु कुछ ही समय पश्चात पाकिस्तान के तत्कालीन सेना प्रमुख परवेज़ मुशर्रफ की शह पर पाकिस्तानी सेना व उग्रवादियों ने कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ करके कई पहाड़ी चोटियों पर कब्जा कर लिया।
2. अटल सरकार ने पाकिस्तान की सीमा का उल्लंघन न करने की अन्तरराष्ट्रीय सलाह का सम्मान करते हुए धैर्यपूर्वक किन्तु ठोस कार्यवाही करके भारतीय क्षेत्र को मुक्त कराया।
3. इस युद्ध में प्रतिकूल परिस्थितियों के कारण पाकिस्तान के साथ शुरू किए गए सम्बन्ध सुधार एकबार पुनः शून्य हो गए।

स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना

भारत भर के चारों कोनों को सड़क मार्ग से जोड़ने के लिए स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना की शुरुआत की गई। इसके अन्तर्गत दिल्ली, कलकत्ता, चेन्नई व मुम्बई को राजमार्गों से जोड़ा गया।

वाजपेयी सरकार के अन्य प्रमुख कार्य

1. एक सौ वर्ष से भी ज्यादा पुराने कावेरी जल विवाद को सुलझाया।
2. संरचनात्मक ढाँचे के लिये कार्यदल, सॉफ्टवेयर विकास के लिये सूचना एवं प्रौद्योगिकी कार्यदल, विद्युतीकरण में गति लाने के लिये केंद्रीय विद्युत नियामक आयोग आदि का गठन किया।
3. राष्ट्रीय राजमार्गों एवं हवाई अड्डों का विकास; नई टेलीकॉम नीति तथा कोंकण रेलवे की शुरुआत करके बुनियादी संरचनात्मक ढाँचे को मजबूत करने वाले कदम उठाये।
4. राष्ट्रीय सुरक्षा समिति, आर्थिक सलाह समिति, व्यापार एवं उद्योग समिति भी गठित कीं।
5. आवश्यक उपभोक्ता सामग्रियों के मूल्यों को नियन्त्रित करने के लिये मुख्यमन्त्रियों का सम्मेलन बुलाया।
6. उड़ीसा के सर्वाधिक निर्धन क्षेत्र के लिये सात सूत्रीय निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रम शुरू किया।
7. आवास निर्माण को प्रोत्साहन देने के लिए अर्बन सीलिंग एक्ट समाप्त किया।
8. ग्रामीण रोजगार सृजन एवं विदेशों में बसे भारतीय मूल के लोगों के लिये बीमा योजना शुरू की।

वाजपेयी जी को काव्य रचनाशीलता एवं रसास्वाद के गुण विरासत में मिले थे। उनके पिता श्री कृष्ण बिहारी वाजपेयी जी ग्वालियर रियासत में तत्कालीन, समसामयिक, सम्मानित कवि थे। वे ब्रजभाषा एवं खड़ी बोली में काव्य रचना करते थे। पारिवारिक वातावरण साहित्यिक एवं काव्यमय होने के कारण उनके विचारों में काव्य रस स्वभाविक रूप से परिसंचरण रहा। उनकी सर्वप्रथम कविता ताजमहल थी, जिसमें उनके व्यथित कवि हृदय का ध्यानाकर्षण ताजमहल की लौकिक सुंदरता पर न केंद्रित होकर कारीगरों के शोषण पर ही बींध गया। वास्तव में कोई भी कवि हृदय कभी कविता से वंचित नहीं रह सकता।

अटल जी ने किशोरावस्था में ही एक अद्भुत कविता लिखी थी – ''हिन्दू तन-मन हिन्दू जीवन, रग-रग हिन्दू मेरा परिचय'', जिससे यह पता चलता है कि बचपन से ही उनका रुझान देश हित की तरफ था।

राजनीति के साथ-साथ सार्वभौमिक समष्टि एवं राष्ट्र के प्रति उनकी वैयक्तिक संवेदनशीलता जीवन पर्यंत प्रकट होती रही। उनके संघर्षमय जीवन, परिवर्तनशील परिस्थितियाँ, राष्ट्रव्यापी आन्दोलन, जेल-जीवन आदि अनेक आयामों के प्रभाव एवं अनुभूति ने काव्य में सदैव ही अभिव्यक्ति की उन्मुक्ति पायी।

अंतिम पड़ाव

1. 2005 से स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्ताओं के कारण सक्रिय राजनीति से सेवानिवृत्त हुए। तत्पश्चात वे राजनीति से संन्यास लेने के बाद नई दिल्ली में 6-ए कृष्णामेनन मार्ग स्थित सरकारी आवास में रहते थे।
2. 16 अगस्त 2018 को लम्बी बीमारी के बाद अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, दिल्ली में श्री वाजपेयी जी का निधन हो गया।

'नो मोबाइल डे'

■ रंजना शर्मा

आज सुबह उठा तो कुछ अलग सा लगा।
ना मोबाइल की घंटी, ना अलार्म की टनटनाहट,
ना माँ की पुकार,
ना ही पिताजी की रोज़ की सख्त आवाज,
सब कुछ - अजीब सा चुप था।

थोड़ी देर नींद में झुलसा हुआ बिस्तर पर पड़ा रहा,
फिर एक झटके में याद आया -
'फोन कहाँ है?'

जैसे ही आँखें पूरी खुलीं, हाथ तकिए के नीचे चला गया -
कुछ नहीं मिला।
बाईं ओर पलटा - नहीं।
दाईं ओर देखा - वहां भी नहीं।
बिस्तर के चारों तरफ़ जैसे कोई खज़ाना ढूंढ रहा हो।

यहीं तो रखा था - कल रात को-
भागता हुआ सीधा माँ के पास गया,
'माँ, मेरा फोन - देखा क्या आपने?'

माँ सब्ज़ी काट रही थीं, बिना मेरी ओर देखे बोलीं : 'पिता जी से पूछ लो।'

कुछ तो गड़बड़ थी।
थोड़ा डरते हुए पिताजी के पास गया,
वो अख़बार पढ़ रहे थे, चश्मा थोड़ा नीचे खिसकाकर बोले:
"आज 'नो मोबाइल डे' है, बेटा।"

क्या??
मैं जैसे सुनकर सुन्न रह गया।
"पर - मेरा होमवर्क? मेरा गेम? मेरा चैटिंग? मेरे सारे नोट्स,
मेरे दोस्तों के ग्रुप, मेरी वीडियो क्लासेस - सब वहीं तो हैं!!"

पिताजी मुस्कराए,
"हमारे समय में भी होमवर्क होते थे, स्कूल भी होता था।
लेकिन तब न मोबाइल था, न नेट- फिर भी हो गया सब।
एक दिन बिना मोबाइल के रहोगे, तो पहाड़ नहीं टूट पड़ेगा।"

मैंने ग़ुस्से से मुँह फुला लिया और चुपचाप अपने कमरे में चला गया।
थोड़ी देर बाद बोरियत होने लगी।
पहली बार दीवार घड़ी को इतने गौर से देखा -
उसकी टिक-टिक भी जैसे कानों में गूंज रही थी।

अलमारी खोली, तो एक पुरानी कॉमिक बुक मिली -
फिर रंगीन पेंसिल निकाली,
डायरी पर कुछ स्केच बनाना शुरू किया।
धीरे-धीरे मुझे मज़ा आने लगा।

माँ आईं, चाय लेकर।
मैंने पहली बार उनकी थकी आँखों में सुकून देखा।

पिताजी अंदर आए और बोले,
"आओ, आज तुम्हें शतरंज सिखाते हैं।"

मैंने चौंक कर कहा,
"कोई ऐप डाउनलोड करनी पड़ेगी?"
वो ठहाका लगाकर हँसे -
"नहीं, बेटा। आज सिर्फ अपनेपन को 'लोड' करना है।"

शाम होने लगी, सूरज ढल रहा था
और मैं मोबाइल के बिना भी जी रहा था।

पहली बार अहसास हुआ कि
मोबाइल ज़रूरी है, पर ज़िंदगी ऑफलाइन भी चलती है।

शायद यही था "नो मोबाइल डे" का असली मकसद।

सीख: थोड़ा अपने लिए, थोड़ा अपनों के लिए - बिना स्क्रीन की दुनिया भी बहुत खूबसूरत है। ❐

एकदिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण वर्ग

■ जया श्रीवास्तव

नैतिक मूल्यों का निर्माण बचपन से ही होता है। बालवाड़ी कार्यक्रम अपनी शुरुआत से ही सेवा बस्तियों के लोगों के लिए एक प्रेरणा रहा है। बच्चों के व्यापक विकास के साथ-साथ, इस कार्यक्रम ने सेवा बस्तियों के लोगों की उन्नति में भी मदद की है उदाहरण के लिए, महिलाओं को जागरूक करना, महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ाना, लड़कियों की शिक्षा में रुचि बढ़ाना और बच्चों को बालवाड़ी में छोड़कर एक काम पूरा करना। इन केंद्रों पर प्राथमिक शिक्षा के माध्यम से चरित्र निर्माण और शिक्षा पर बल दिया जाता है। हवन-यज्ञ, कहानियों से बच्चों का संस्कार जागरण होता है। आज बालवाड़ी अत्यंत आधुनिक तकनीक का प्रयोग कर बाल विकास के अनूठे उदहारण प्रस्तुत कर रही है। दिल्ली भर में सैकड़ों बालवाड़ी केंद्र, जहाँ बच्चों को प्राथमिक शिक्षा के अलावा भारतीय संस्कृति के मूल्यों का ज्ञान दिया जाता है, चल रहे हैं। ये बच्चे वंचित बस्तियों से आते हैं और उनके माता-पिता बड़ी उम्मीदों और सपनों के साथ इन्हें भेजते हैं कि इन बच्चों को शिक्षा का लाभ मिलेगा और अच्छे संस्कार मिलेंगे, जिससे वे जीवन में बेहतर नागरिक बनेंगे। वे प्रबुद्ध व्यक्ति बनेंगे और जीवन में शिक्षा और अच्छे मूल्यों के महत्व को समझेंगे। इसलिए, कम उम्र से ही अच्छे संस्कारों को अपनाने की आदत डालना बेहद ज़रूरी है। ये बालवाड़ी बच्चों को पढ़ाई और शिक्षा का महत्व समझाने का असाधारण कार्य कर रहे हैं।

सेवा भारती का उद्देश्य बालवाड़ी की स्थिति को उस स्तर तक ऊपर उठाना है जहाँ न केवल गरीब लोग, बल्कि मध्यम वर्ग के माता-पिता भी अपने बच्चों को इन बालवाड़ी में भेजें। इसका उद्देश्य अमीर-गरीब के बीच के अंतर को यथासंभव कम करना और सभी सामाजिक स्तरों के बच्चों को एक साथ लाना है, ताकि एक न्यायसंगत और समतामूलक समाज का मार्ग प्रशस्त हो सके।

कई शिक्षिकाओं ने बालवाड़ियों में जाकर शिक्षण के कई नवीन तरीके अपनाए हैं, जिससे यह और भी आसान और बोधगम्य हो गया है। वे अन्य लड़कियों के लिए शिक्षा प्राप्त करने हेतु प्रेरणास्रोत बन गई हैं।

इसी श्रृंखला में, बालवाड़ी की शिक्षिकाओं को उच्च स्तर का प्रशिक्षण देने के लिए, सेवा भारती, शिक्षा प्रकल्प द्वारा एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण वर्ग 11 नवंबर, 2025 दिन मंगलवार को सेवा भारती के आठ विभागों और तीस ज़िलों में आयोजित किया गया। प्रशिक्षण वर्ग की शुरुआत गायत्री मंत्र से हुई। श्रीमती जया श्रीवास्तव जी, शिक्षा प्रमुख, दिल्ली प्रांत ने विभागानुसार परिचय करवाया। इस शिविर में आर के पुरम-12, पूर्वी- 21, उत्तरी- 20, केशवपुरम-40, झंडेवालान 37, यमुना विहार 10, दक्षिणी 9, स्मार्ट बालवाड़ी 23 शिक्षिकाएं शामिल हुई। इस वर्ग में विस्तृत शिक्षा टोली सदस्य, सभी विभाग मंत्री, प्रशिक्षिकाएं शामिल हुए। इस वर्ग में दिल्ली सेवा भारती से श्रीमती संगीता त्यागी, सुश्री अंजू पांडेय, बाल भारती बैंगलोर से श्रीमती इस्मिता चौधरी, श्रीमती एकता माहेश्वरी, श्रीमती चांदनी मेहता, श्रीमती तृप्ति गोडबोले ने अपना योगदान दिया।

पहले सत्र में सुबह 10.00 से 11.10 तक श्रीमती संगीता त्यागी ने लगभग चालीस मिनट तक सभी को योग करवाया। इसके बाद श्रीमती इस्मिता चौधरी ने सभी शिक्षिकाओं को खेल के माधयम से कैसे बच्चो को संस्कार और शिक्षा

दोनों दिए जा सकते हैं, यह सिखाया। इस विषय पर सभी ने खूब अच्छे से उनसे सीखा और सभी को यह सत्र बहुत ही अच्छा लगा।

इसके बाद का सत्र क्राफ्ट का था जिसे श्रीमती एकता माहेश्वरी ने लिया। उन्होंने बताया कि क्राफ्ट से बच्चों की कल्पनाशक्ति और रचनात्मकता क्षमता को बढ़ावा मिलता है। कटिंग, पेंटिंग और पेस्टिंग जैसे शिल्प विचार से हाथों की मांसपेशियां मजबूत होती हैं, जिससे बच्चों के कौशल में सुधार होता है। सभी शिक्षिकाओं ने इसमें बहुत बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और बहुत कुछ नया सीखा।

इन दो सत्रों के बाद भोजावकाश हुआ जो लगभग दो घंटे का था। तीसरा सत्र जो सुश्री अंजू पांडेय ने गीत के माध्यम से लिया।

चौथा सत्र श्रीमती चांदनी मेहता ने वर्ली चित्रकला से सम्बंधित लिया। वर्ली चित्रकला महाराष्ट्र की एक प्राचीन आदिवासी लोक कला है, जिसे वारली जनजाति द्वारा बनाया जाता है। यह अपनी सादगी और ज्यामितीय आकृतियों (जैसे वृत्त, त्रिभुज, और वर्ग) के लिए जानी जाती है, जो प्रकृति, सामाजिक जीवन, फसल चक्र, उत्सवों और रीति-रिवाजों को दर्शाती है। वर्ली चित्र को बताते हुए कैसे कहानी को बच्चों तक पहुंचाना है इसमें ये बताया गया जो एक अच्छा प्रयोग है।

पांचवां सत्र श्रीमती तृप्ति गोडबोले ने कहानी कला पर लिया। कहानी कला - शब्दों, चित्रों, या अन्य माध्यमों से एक संदेश या कथा को प्रभावी ढंग से बताने की कला है। इसका उद्देश्य छोटे बच्चो को आकर्षित करना, भावनाएं जगाना और विचारों, अनुभवों को यादगार तरीके से संप्रेषित करना है। कहानी कहने के लिए एक सुसंगत कथानक, पात्र और परिवेश की आवश्यकता होती है। एक दिवसीय प्रशिक्षण वर्ग एक नया अनुभव रहा और इसमें भाग लेने वाली शिक्षिकाओं का फीडबैक अच्छा रहा। शिक्षा टोली भविष्य में भी ऐसे वर्ग लगाने की योजना पर विचार कर रही है। ❐

(शिक्षा प्रमुख, दिल्ली प्रांत)

विचार से होता है परिवर्तन

■ रितेश सिंह

जीवन रातोंरात खुशहाल नहीं होता। यह एक सफ़र है। परिवर्तन कोई स्विच नहीं है जिसे आप घुमाते हैं-यह एक प्रक्रिया है, एक लहर जैसा प्रभाव जो भीतर से शुरू होकर बाहर की ओर फैलता है। यह प्रभावशाली दृश्य खूबसूरती से दर्शाता है कि परिवर्तन कैसे घटित होता है:

हर परिवर्तन एक छोटी सी चिंगारी से शुरू होता है-एक विचार, संभावना की एक फुसफुसाहट। जिज्ञासा, पीड़ा, इच्छा या प्रेरणा से जन्मा एक विचार। वह विचार आपके मन में आकार लेने लगता है। आप केवल क्या है, इसके बजाय क्या हो सकता है, इसके बारे में सोचने लगते हैं। आंतरिक संवाद बदल जाता है। जैसे-जैसे विचार तीव्र होते हैं, भावनाएँ भी जागृत होती हैं। जुनून, डर, आशा-ये भावनाएँ कुछ अलग करने, आगे बढ़ने की इच्छा को बढ़ावा देती हैं।

भावनाएँ रणनीति को जन्म देती हैं। आप आगे बढ़ने का रास्ता बनाना शुरू करते हैं, चाहे शुरुआती कदम कितने भी छोटे क्यों न हों। एक रोडमैप बनने लगता है।

योजनाएँ तभी प्रभावशाली होती हैं जब उन्हें लगातार लागू किया जाए। इसलिए आप आदतें बनाते हैं-अपने लक्ष्य के अनुरूप छोटे-छोटे, रोज़ाना के काम। बदलाव अपनी जड़ें जमाना शुरू कर देता है।

आदतों के लिए वफ़ादारी ज़रूरी होती है। आप मुश्किल दिनों में भी आगे आते हैं, पूर्णता की बजाय प्रगति को चुनते हैं। यहीं पर ज्यादातर लोग हार मान लेते हैं, लेकिन जो प्रतिबद्ध होते हैं वे विकसित होते हैं।

समय के साथ, आपके चुनाव, आपके परिवेश, आपकी मानसिकता और आपकी ऊर्जा को आकार देते हैं। जो कभी प्रयास था, वह आपकी नई सामान्यता बन जाता है।

और अंत में लगभग चुपचाप बदलाव प्रकट होता है। आप एक अलग व्यक्ति बन जाते हैं। इसलिए नहीं कि आपने इसकी कामना की थी, बल्कि इसलिए कि आपने इसे बनाया था। असली बदलाव प्रेरणा से शुरू नहीं होता। यह एक शांत विचार और निरंतर अनुसरण से शुरू होता है। इसलिए अगर आप अटके हुए हैं या अभिभूत हैं, तो पहले विचार से शुरुआत करें। ❐

सुरक्षा का मजबूत कवच

■ कमलेश त्रिपाठी

भारतीय नौसेना दिवस हर वर्ष 4 दिसंबर को मनाया जाता है। इस दिन भारतीय नौसेना की वीरता, सामरिक क्षमता और राष्ट्र सुरक्षा में उसके योगदान को सम्मानित किया जाता है।

ऐतिहासिक कारण : भारतीय नौसेना दिवस 1971 के भारत-पाक युद्ध में भारतीय नौसेना द्वारा किए गए "ऑपरेशन ट्राइडेंट" की सफलता को याद करने के लिए मनाया जाता है। 4 दिसंबर की रात भारतीय नौसेना ने पाकिस्तान के कराची बंदरगाह पर हमला किया। यह भारतीय नौसेना का पहला बड़ा आक्रमण था।

इस ऑपरेशन की खास बातें: भारतीय नौसेना के मिसाइल बोट स्क्वाड्रन ने कराची पर सटीक हमला किया। पाकिस्तान की कई नौसैनिक संपत्तियाँ नष्ट हुईं। कराची बंदरगाह पर तेल भंडार में आग लगने से भारी नुकसान हुआ। भारतीय नौसेना को शून्य हानि हुई, यह इसकी सबसे बड़ी सफलता मानी जाती है। इसी शानदार विजय की स्मृति में हर वर्ष 4 दिसंबर को नौसेना दिवस मनाया जाता है।

भारतीय नौसेना का इतिहास व विकास : भारतीय नौसेना की स्थापना औपचारिक रूप से 1612 में ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा सुरक्षा बल के रूप में हुई थी। स्वतंत्र भारत में 1950 में इसका नाम रॉयल इंडियन नेवी से बदलकर इंडियन नेवी कर दिया गया।

इसका आदर्श वाक्य है- "शं नो वरुण:" जल के देवता वरुण हमारे लिए कल्याणकारी हों। मुख्यालय नई दिल्ली में है।

प्रमुख गठन

Western Naval Command – मुंबई

Eastern Naval Command – विशाखापट्टनम

Southern Naval Command – कोच्चि

नौसेना की मुख्य भूमिकाएँ

1. समुद्री सुरक्षा

भारत की 7516 किमी लंबी तटीय सीमा की रक्षा नौसेना करती है।

2. समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा

भारत के 90% से अधिक व्यापार समुद्री मार्गों से होता है। नौसेना इसकी निगरानी करती है।

3. युद्धकालीन रणनीति

समुद्री युद्ध, पनडुब्बी ऑपरेशन, मिसाइल अटैक, एयरक्राफ्ट कैरियर आदि की जिम्मेदारी।

4. आपदा राहत

भूकंप, बाढ़, तूफान जैसी स्थितियों में नौसेना त्वरित मदद पहुंचाती है। जैसे ख ऑपरेशन राहत, ऑपरेशन समुद्र सेतु, ऑपरेशन मित्रा आदि।

5. अंतरराष्ट्रीय सहयोग

अन्य देशों की नौसेनाओं के साथ संयुक्त अभ्यास जैसे- मालाबार, IBSAMAR, Varuna, SLINEX आदि।

भारतीय नौसेना की प्रमुख शक्तियाँ : एयरक्राफ्ट कैरियर, आईएनएस विक्रमादित्य, आईएनएस विक्रांत (स्वदेशी), डिस्ट्रॉयर और फ्रिगेट, आईएनएस कोलकाता, आईएनएस चेन्नई, शिशुमार वर्ग पनडुब्बियाँ, स्कॉर्पीन क्लास (कालवरी) पनडुब्बियाँ

नौसेना विमानन : पी8आई, मिग 29 के, एसलएच ध्रुव, सी किंग हेलिकॉप्टर

मसाइल क्षमताएँ : ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज़ मिसाइल, लंबी दूरी की एंटी-शिप मिसाइलें

नौसेना दिवस पर होने वाले कार्यक्रम: नौसैनिक परेड व प्रदर्शन, मुंबई और विशाखापट्टनम में जहाजों, पनडुब्बियों और विमान का प्रदर्शन, साइलेंट ड्रिल और बैंड शो, नौसेना बैंड का प्रदर्शन और नौसैनिक जवानों की साइलेंट ड्रिल।

शहीदों को श्रद्धांजलि : समुद्र में शहीद हुए सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित की जाती है।

स्कूल/कॉलेज कार्यक्रम: निबंध, भाषण, पेंटिंग प्रतियोगिताएँ और जागरूकता कार्यक्रम।

नौसेना दिवस का महत्व : यह दिन हमें समुद्र की सुरक्षा में नौसेना की भूमिका याद दिलाता है। हम उन सैनिकों को सम्मान देते हैं जो समुद्र में लगातार निगरानी करते हैं। यह युवाओं में राष्ट्रभक्ति और सुरक्षा बलों के प्रति सम्मान बढ़ाता है। ❐

डॉ. विनोद बब्बर का विशेष साक्षात्कार

मोबाइल, सोशल मीडिया के मोहपाश से बचें

अपने गहन चिंतन, सुशोधित लेखन और मानवीय संवेदनाओं के लिए विख्यात वरिष्ठ साहित्यकार, पत्रकार एवं बहुभाषाविद डॉ. विनोद बब्बर का साहित्यिक संसार जितना व्यापक है, उतना ही हृदयस्पर्शी भी है। विभाजन की त्रासदी से गुजरते परिवार में जन्मे और साधारण परिवेश में पले-बढ़े डॉ. बब्बर ने संघर्षों को ही अपनी शक्ति बनाया। सरकारी स्कूल की साधारण-सी कक्षाओं से आरंभ हुई शिक्षा यात्रा आगे चलकर देश-विदेश के महत्वपूर्ण साहित्यिक व पत्रकारिता मंचों तक पहुँची। पचास से अधिक पुस्तकों के लेखन-धारक डॉ. बब्बर साहित्य को सिर्फ अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि साधना मानते हैं। उनके लेखन में जीवन की कठोर यथार्थता भी है और मानवता की गर्माहट भी। सत्पुरुषों की संगत, अच्छे साहित्य से जुड़ाव तथा समाज की पीड़ा के प्रति गहरी संवेदना ने उनके व्यक्तित्व को विशिष्ट रूप प्रदान किया है। देश-विदेश से मिले अनेक सम्मानों के बावजूद वे स्वयं को मानव-धर्म और सेवा की भावना के निकट पाते हैं। प्रस्तुत है डॉ. विनोद बब्बर से विशेष संवाद, जहाँ वे अपने जीवन, संघर्षों, अनुभवों और साहित्यिक यात्रा के महत्वपूर्ण पक्षों को हमारे साथ साझा कर रहे हैं-

आपका बचपन किस प्रकार बीता?

मेरे परिवार को विभाजन की विभिषिका का सामना करना पड़ा। जीवन को फिर से पटरी पर लाने के लिए कठिनाइयां-चुनौतियां थीं। उसका प्रभाव मेरे बचपन पर होना स्वाभाविक था। दस सदस्यों वाले एक मध्यम वर्गीय परिवार का अंग रहा हूं। शिक्षा के नाम पर सरकारी स्कूल थे जहां चार पैसे और बाद में नौ पैसे फीस थी। अधिकांश छात्र वह भी नहीं दे पाते थे। अक्सर बड़े भाई-बहनों की पुरानी पुस्तकें विरासत में प्राप्त होती थीं। अभावों के बावजूद बचपन सुखद था। 6 वर्ष की आयु में शाखा से जुड़ा। खेलकूद से आरंभ हुए इस जुड़ाव ने राष्ट्रभक्ति और संस्कृति की शक्ति से साक्षात्कार कराया। अनेक विरोधों-अवरोधों के बावजूद रचनात्मक कृतित्व से व्यक्तित्व तक मेरा सम्पूर्ण तन-मन का रोम-रोम राष्ट्रीयता मूलक विचार से निर्मित हुआ। सत्य कहूं तो बचपन के संघ से जुड़ाव को निकाल दें तो मैं शून्य हूं।

क्या आपके प्रारंभिक परिवेश ने आपके साहित्यिक रूझान को प्रभावित किया?

मेरे परिवार में कभी कोई साहित्यकार नहीं था, लेकिन मेरी पूज्य माताजी साहित्यप्रेमी थीं। वे बिना स्कूल गये चार भाषाओं पंजाबी, हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी पढ़, लिख, बोल सकती थीं। वे हमे धार्मिक ग्रन्थों तथा अन्य पुस्तकों के अंश सुनाया करती थीं, इस प्रक्रिया को मेरी कल्पनाशीलता के विकास का प्रथम

चरण माना जा सकता है। वह कहा करती थीं,'कहानी में कुछ ऐसा जरूर होता है जो कहा तो नहीं गया पर है जरूर।' यह विशेष उल्लेखनीय है कि प्राइमरी स्कूल में गुड़गांव के हमारे अध्यापक श्री जसोदानंद जी अक्सर कहा करते थे कि 'तू तो कविता बोलता है।' बहुत बाद में मैंने अनुभव किया कि मेरे बोलने में अक्सर कुछ तुकबंदी हो जाती है। जिसे गुरुजी कविता कहा करते थे। लेकिन जहां तक कविता लिखने का प्रश्न है, मैंने प्रथम कविता दसवीं कक्षा के दौरान लिखी।

आपकी 50 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। लेखन का आपका मूल प्रेरणा-स्त्रोत क्या है?

हम पांच भाई और पांच बहन थे। सारा परिवार सुसंस्कृत था। लेकिन दुर्भाग्य से मेरा मंझला भाई खराब संगत में पड़कर नशे की आदत का शिकार हो गया। बड़े भाई साहब (रमेश जी) ने उसकी बहुत देखभाल, निगरानी की। यहां तक कि उन्होंने सुदर्शन के लिए स्वयं भी बहुत कष्ट सहे। उसे सुधारने अर्थात् व्यस्त रखने के लिए अनेक उपाय सोचे गये। अंत में उसके लिए एक दुकान खोल दी गई जहां उस काल मे प्रचलित पुस्तकें यथा नॉवल्स, कॉमिक्स आदि उपलब्ध थी। परिवार में किसी को जानकारी तो थी नहीं कि कौन सी किताबें लेनी चाहिए। किसी ने बताया कि एक लाइब्रेरी बिक रही है। अतः बिना सोचेख़्समझे वे हजारों पुस्तकें खरीद ली गई लेकिन वे साहित्यिक पुस्तके थीं कबीर, नानक, मीरा, सूर, तुलसी, कालिदास, दादू, पलटू, भूषण, बिहारी के अतिरिक्त आचार्य चतुरसेन, देवकीनंदन खत्री, आचार्य रघुवीर, रवीन्द्रनाथ टैगोर, मुंशी प्रेमचन्द, अमृतलाल नागर, पंण्राहुल सांकृत्यायन, गिरधर कविराय, हरिऔध, भारतेन्दु, टॉलस्टॉय, शेक्सपियर जैसे अनेक भारतीय और विदेशी महान साहित्यकारों की कृतियां थीं। दुर्भाग्य यह कि उन हजारों पुस्तकों में से एक भी पुस्तक न तो बिकी और न ही किराये पर ली गई। सो दुकान पर ताला जड़ दिया गया। वे पुस्तकें मेरी साथी बनीं और लगभग सभी पुस्तकें मैंने पढ़ ली। उससे मेरा जहां देश-विदेश के साहित्य से परिचय हुआ, वहीं संस्कृति के विभिन्न पक्षों और इतिहास की जानकारी बढ़ी। अध्ययन से प्राप्त आनंद ने साहित्य को मेरा स्थायी मित्र बना दिया।

'राष्ट्र-किंकर' का 24 वर्ष से संपादन करते हुए सबसे बड़ी चुनौती क्या रही?

बिना किसी आर्थिक सहयोग के पत्रिका प्रकाशन बहुत बड़ी चुनौती है। "राष्ट्र-किंकर" आरंभ करने के पीछे की घटना ने हर चुनौती का सामना करने की ऊर्जा दी। मेरे लेख विभिन्न समाचार पत्रों-पत्रिकाओं में लंबे समय से प्रकाशित होते थे। एक पत्रिका अपने कुछ पृष्ठ असांस्कृतिक, अशालीन चित्रों को समर्पित करती थी। मैं हर बार संपादक-प्रकाशक महोदय को इससे बचने को कहता। एक बार वह भड़क कर बोले, 'बातें बनाना आसान हैं परंतु पत्रिका चलाना मुश्किल है। अपनी पत्रिका शुरू कर, साल-दो साल चलाकर दिखाओ।' बेशक बेमन से परंतु चुनौती स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई चारा न था। डाक लाइसेंस से हर सप्ताह 'राष्ट्र-किंकर' की हजारों प्रतियां देश भर में पहुंचने लगीं। आशा से बढ़कर स्वीकार्यता प्राप्त होने लगी। 'राष्ट्र-किंकर' को देशप्रेम और संस्कृति का पर्याय समझा जाने लगा। लेकिन आर्थिक प्राप्ति तो दूर जो पास था वह भी जाने लगा। किसी दूसरे से टाइपिंग, सेटिंग का खर्च बचाने के लिए रात-रातभर जागकर स्वयं काम करता। अध्यापन, लेखन, टीवी-रेडियो से जो प्राप्त होता वह भी 'राष्ट्र-किंकर' की सेवा में समर्पित। पर मन में एक बार भी पथ से विचलित होने का विचार तक नहीं आया। हाँ, वैश्विक महामारी कोरोना काल में जरूर कुछ समय प्रकाशन बाधित रहा। हम चुनौतियां के समानान्तर चलते रहे, चलते रहेंगे जब तक शरीर काम करेगा।

आपकी मातृभाषा हिंदी न होते हुए भी आपने हिंदी को ही लेखन के लिए क्यों चुना?

बेशक हिंदी मेरी मातृभाषा नहीं है लेकिन मेरी मातृभूमि की भाषा है। निश्चित रूप से मातृभाषा सर्वोपरि है। उसके माध्यम से हम अपने पूर्वजों की महान सांस्कृतिक विरासत से जुड़ते हैं। घर पर और स्वजनों के साथ मातृभाषा का अधिकतम उपयोग होना चाहिए लेकिन जहां तक विस्तृत परिवार यानी राष्ट्र का प्रश्न है उससे जुड़ने के लिए राष्ट्रभाषा आवश्यक है। अतः देश के बहुसंख्यक लोगों से संवाद के लिए हिंदी का कोई विकल्प नहीं है।

आज के समय में हिंदी भाषा के समक्ष कौन-सी सबसे बड़ी चुनौतियाँ हैं? क्या आप हिंदी की दशा से संतुष्ट हैं?

हिंदी भारतीय बोलियोंधभाषाओं का समुच्चय है। इसलिए हिंदी इस देश की सम्पर्क भाषा है। हिंदीत्तर क्षेत्रों में भी हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ा है। इंटरनेट, सोशल मीडिया पर हिंदी विस्तार पा रही है। विश्व के अनेक विश्वविद्यालयों में हिंदी के अध्ययन की सुविधा है। पर्याप्त साहित्य-सृजन भी हो रहा है। लेकिन यह भी सत्य है कि हिंदी बोली तो जा रही है लेकिन लिखी बहुत कम जा रही है। संविधान ने हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया है लेकिन स्वतंत्रता के सात दशक बाद भी सरकारी कामकाज तक में हिंदी को उचित सम्मान नहीं मिल रहा है। तो लोक-व्यवहार विशेष रूप से शिक्षा का माध्यम मातृभाषा के स्थान पर विदेशी अंग्रेजी होना खतरे की घंटी है। आज उच्च शिक्षा से नौकरियों तक अंग्रेजी छाई हुई है। दुखद आश्चर्य यह है कि हिंदी के लिए आंदोलन करने वाले लोग ही अंग्रेजी के सामने घुटने टिका रहे हैं। हर

नारे, हर योजना पर अंग्रेजी की छाप है। यहां यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि मैं अंग्रेजी या किसी विदेशी भाषा का विरोधी नहीं हूं। अधिक से अधिक भाषाएं सीखना, उनके साहित्य को पढ़ना, उनके माध्यम से ज्ञान प्राप्त करना गर्व की बात है। लेकिन इसके लिए अपनी बोली- भाषाओं को उपेक्षित, अपमानित करना बेहद शर्मनाक है। हमारे यहां भी ज्ञान प्राप्ति का माध्यम आरम्भ में मातृभाषा और उच्च शिक्षा के लिए हिंदी ही होना चाहिए। अंग्रेजी या अन्य किसी विदेशी भाषा को एक विषय के रूप में पढ़ने या पढ़ाने का कहीं कोई विरोध नहीं है। यह संतोष की बात है कि नई शिक्षा नीति में प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा को महत्व दिया गया है। चिकित्सा, इंजीनियरिंग की शिक्षा भी अपनी भाषाओं में देना आरंभ हुआ है।

क्या आप भारतीय भाषाओं में भिन्नता अथवा टकराव की स्थिति महसूस करते हैं?

मेरा मानना है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में न कभी कोई टकराव था, न है और न ही कभी हो सकता है। सभी भारतीय भाषाएं सहोदर हैं इसलिए इनमें बहुत साम्य है। हां, कुछ लोग विदेशी भाषा का प्रभुत्व बरकरार रखने के लिए ऐसा प्रयास जरूर कर रहे हैं। इस संबंध में मुझे तिरुपति में आयोजित सम्मेलन का स्मरण होता है। आयोजकों ने कुछ दिन पूर्व ही मुझे हिंदी की बजाय अंग्रेजी में अपने विचार प्रकट करने की तैयारी के लिए कह दिया था। उनके अनुसार, 'यहां हिंदी को कोई नहीं समझता। यह भी संभव है कि विरोध हो।' लेकिन दिल्ली से चैन्ने पहुँचकर मैं अपने स्वर्गीय मित्र डॉ. बालशौरि रेड्डी के निवास पर गया। मेरे अनुरोध पर उन्होंने कुछ हिंदी वाक्यांशों को तेलुगु में अनुवादित कर देवनागरी में लिख दिये थे। तिरूपति के संपादक सम्मेलन में जब मैंने अपना उद्‌बोधन आरंभ किया तो तालियों की गड़गड़ाहट से सभागार गूंज उठा। क्योंकि मैंने कहा था, 'कलियुग बैकुंठ तिरुपति कि नमस्कारमुन्नु! भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामि भक्ति भावन तो हृदयपूर्वकंगा नमस्करिंचु चुन्नानु। नाकु तेलुगु रादु, कावुन हिंदी लो माटलकिंदकु अनुमति देयसेयंडि!' अर्थात् 'मैं कलयुग के बैकुंठ तिरुपति को प्रणाम करता हूँ। भगवान श्री वेंकटेश्वर स्वामी की पवित्र भक्ति भावना को हृदयपूर्वक नमस्कार करता हूँ। मुझे तेलुगु नहीं आती इसलिए मुझे हिंदी में अपनी बात कहने की अनुमति प्रदान करें।' इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि तालियों के साथ यह स्वर भी गूंजा, 'बोलो, बोलो! हम हिंदी समझते हैं।' भारत के सभी राज्यों का भ्रमण करने के बाद मैं गर्व के साथ कह सकता हूं कि हिंदी के कारण मुझे कभी भी, कहीं भी कोई असुविधा नहीं हुई।

आपकी दृष्टि में साहित्य क्या है?

साहित्य केवल मनोरंजन नहीं होता। वास्तव में हर युग की कुछ अपनी चुनौतियां होती हैं। ये चुनौतियां जब अर्जुन के रूप में अवसाद, विषाद, निराशा में डूबे प्रश्न लेकर अपने समय के चक्रधारी के पास पहुंचती हैं तो समाधान रूपी गीता का प्रकटीकरण होता है। परिस्थितियों की पीड़ा जब महर्षि वाल्मीकि के मुख से, 'मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः' उच्चारित करती है, तो हमें ' रामायण' प्राप्त होती है। अर्थात् जब भी किसी साहित्यकार की संवेदना उसे अंतर्तम तक झकझोरती है तो कुछ इसी तरह का लोकहितकारी साहित्य समाज को मिलता है। साहित्य वही जो 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' का संदेश प्रसारित करे।

अपने लेखन पर गर्व जैसा कोई संस्मरण?

गर्व तो नहीं, हां संतोष जैसे अनेक क्षण रहे हैं। एक विशेष घटना का उल्लेख करना चाहूंगा। एक बार दिल्ली की तत्कालीन मुख्यमंत्री ने उण्प्रण और बिहार के लोगों को दिल्ली पर 'बोझ' बताया। उस दौरान एक प्रमुख समाचार पत्र में प्रतिदिन समसामयिक विषय पर मेरी कुंडली प्रकाशित होती थी। उस विषय पर भी कुंडली लिखी। उसके कुछ महीने बाद जब मैं अपने साथी के साथ शाहदरा मेट्रो स्टेशन से रिक्शे पर सवार हुए। रास्ते में उस रिक्शेवाले ने कहा, 'मुझे खुशी है कि आप मेरे रिक्शे पर बैठे?' 'दिन भर न जाने कितने लोग तुम्हारे रिक्शे पर बैठते हैं। इसमें खुशी जैसा क्या है मेरे भाई?' तब तक वह स्थान आ गया जहां हमें जाना था। उसने किराये लेने से इंकार करते हुए अपनी जेब से अखबार की वह कटिंग निकालकर दिखाई जिस पर मेरे चित्र के साथ वह कुंडली छपी थी। उसकी अंतिम दो पंक्तियां थीं, 'गर किंकर रोजी मिले, तो कौन उड़वावे खिल्ली-मुझको मेरा गांव भला, तुम्हें मुबारक दिल्ली।'

पत्रकारिता और साहित्य, दोनों क्षेत्रों को आप कैसे संतुलित करते हैं?

पत्रकारिता और साहित्य सहोदर है। पत्रकारिता जल्दबाजी में लिखा गया साहित्य है और साहित्य पुराने समाचारों (इतिहास) के क्रियाकलापों से प्रेरणा लेकर वर्तमान और भविष्य के लिए जागृत-जीवंत बनाने का प्रयास है। दोनो में

एक महत्वपूर्ण अंतर है पत्रकारिता आवश्यकता के अनुसार की जाती है तो साहित्य सृजन अंतर्मन में उपजे विषय और विचार के अनुसार होता है।

अनेक देशों की साहित्यिक एवं सांस्कृतिक यात्राएँ, चुनाव आयोग के लिए नारे और दूरदर्शन की टेली फिल्म हेतु के संवाद लेखन, आपके साहित्य पर अनेक शोधकार्य पूर्ण होने को आप किस प्रकार देखते हैं?

अपनी साहित्य यात्रा में बहुत कुछ प्राप्त हुआ। चुनौतियों ने सीखने का अवसर दिया। निखारा और निरंतर कुछ करते रहने की ऊर्जा और उत्साह दिया। परिस्थितियों ने अवसर दिये। इन अवसरों में विदेश यात्राएं भी शामिल हैं जहां तुलनात्मक अध्ययन करते हुए मैंने अपनी देश और यहां की संस्कृति को श्रेष्ठ पाया। दशकों पूर्व चुनाव आयोग के लिए लिखे नारे को पिछले चुनाव में चुनाव आयोग द्वारा मतदान विज्ञापन में देख संतोष हुआ। अपने साहित्य पर पीएचडी करने वाले से मिलकर जहां अच्छा लगता है वहीं उनके द्वारा चयनित विषय पर चिंतन से हर बार नवनीत प्राप्त होता है।

नई पीढ़ी के लेखकों के लिए आपका क्या संदेश है?

साहित्यण्ण्ण आत्मा, संवेदना, मानवीय व्यवहार और भावों की अभिव्यक्ति है। युगानुरूप चीजें, व्यवहार, भाव, और संवेदनाएं बदलती हैं लेकिन संस्कृति की आत्मा, राष्ट्रप्रेम नहीं बदलनी चाहिए। इनके साथ ही प्रेम, स्नेह, राग, द्वेष, त्याग, बलिदान, मानवीय सहयोग सहायता शाश्वत हैं। सावधानी से पुस्तकों का चयन कर नए लेखकों को खूब पढना चाहिए। ये ही उनकी शिक्षक हैं। ये ही मार्गदर्शक हैं। तुलसी, कबीर, दिनकर, निराला, टैगोर, आचार्य चतुरसेन, शरतचंद, गालिब, तोल्स्तोय, डिकिन्स आदि की रचनाओं से बडा कोई शिक्षक दूसरा नहीं।

वर्तमान परिवार व्यवस्था एवं नई पीढ़ी के बीच के संबंध, इनके लिए आपका क्या संदेश है?

आज परम्परागत परिवार व्यवस्था सुप्त के बाद लुप्त होने के कगार पर है। संयुक्त परिवार का स्थान एकल परिवार ने ले लिया है जहां पति-पत्नी और एक या दो बच्चे हैं। माता-पिता दोनों के कामकाजी होने के कारण वहां पारिवारिक समर्थन और संस्कारों का अभाव स्वाभाविक है। परिणामस्वरूप बच्चों में अकेलापन और वे स्व-केंद्रित भाव बढ़ रहा है। सहिष्णुता लुप्त हो रही है। शिक्षा परिणाम मूलक है जहां नैतिकता उपेक्षित- प्रतिबंधित सी है। अतः सामाजिक और भावनात्मक विकास बाधित है। परंपराओं, संस्कारों और अपनी संस्कृति से दूर आज के बच्चे पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण करते दिखाई देते हैं। बच्चों को उच्च, व्यवसायिक शिक्षा के माध्यम से मनी प्लांट बनाने की होड़ के इस दौर में भी आपसी तालमेल, स्नेह और सहयोग जैसे मूल्यों को बनाए रखा जाए। इस कार्य में साहित्य महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। लेकिन दुखद यह कि मोबाइल, इंटरनेट, सोशल मीडिया ने बच्चे तो दूर बड़ों को भी अपने मोहपाश में ऐसा बांधा है कि साहित्य से दूर का नाता हो गया है। सकारात्मक बदलाव तभी संभव है जब पहले अभिभावक सुधरे। बच्चे तो उनका अनुकरण-अनुसरण करेंगे ही।

आप स्वयं को समाज द्वारा किस रूप में याद किए जाना चाहोगे?

याद और भी अपने बाद?? मैं नहीं चाहता कि कोई पत्थर ऐसा हो जिस पर मेरा नाम खोदा जाये। क्योंकि मैं जो कुछ भी कर सका हूं, उसमें मेरा कुछ नहीं है। वह सब प्रकृति और परिस्थितियों का प्रभाव है। अगर परिस्थितियां भिन्न होतीं तो शायद इतने कागज काले करने का अवसर ही न मिलता। लेकिन यह जरूर कहना चाहूंगा, मेरा एक भी शब्द यदि किसी को भी केवल प्रभावित नहीं, वास्तविक स्वाभावित अर्थात् सकारात्मक दिशा में ले जाने में सफल हो सका तो यही मेरी लेखनी की सार्थकता होगी। इतिहास में अमर होने ही चाह बेमानी है। जो निष्ठुर इतिहास बड़े-बड़े योद्धाओं, समाज सुधारकों को विस्मृत कर सकता है तो उसके पास मेरे जैसे अदना से व्यक्ति के पास समय और स्थान होना असंभव है। मेरा देश, मेरी संस्कृति अजर-अमर रहे यह कामना जरूर है। इसकी माटी से मैं हूं और मेरा यह पंचभौतिक शरीर फिर से इसी माटी का अंश होगा। तेरा वैभव अमर रहे मां- हम दिन चार रहे, न रहें!

आमतौर पर कहा जाता है कि हर सफल व्यक्ति के पीछे कोई नारी होती है। क्या आपकी सफलता के साथ भी ऐसा है या आप स्वयं को इसका अपवाद मानते हैं?

अगर यह नियम शाश्वत है तो भला मैं इसका अपवाद कैसे हो सकता हूं। लेकिन मेरी एक नहीं, अनेक प्रेरणाएं हैं। यदि मेरी कोई सफलता है तो उसका श्रेय मां के साथ-साथ मेरी मातृभूमि, मातृभाषा और मातृभूमि की भाषा को है जिन्होंने मुझे वह सब कुछ दिया जिसे पाकर कोई भी स्वयं को सौभाग्यशाली ही समझेगा।

- द्वारा रंजना शर्मा

कर्म की ओर धकेलती है गीता

■ स्वाती पाठक

श्रीमद्भगवद्गीता योगेश्वर श्रीकृष्ण की वाणी है। भगवान श्रीकृष्ण ने महाभारत के युद्ध के मैदान में अर्जुन को कर्म करने लिए जो उपदेश दिया था वही श्रीमदभगवदगीता में लिखित है। महाभारत के अनुसार कुरुक्षेत्र युद्ध में श्री कृष्ण ने गीता का जो सन्देश अर्जुन को सुनाया था वह महाभारत के भीष्मपर्व में लिखा हुआ है। इसके प्रत्येक श्लोक में ज्ञनरूपी प्रकाश है, गीता के विवेक से अज्ञान का अधंकार नष्ट हो जाता है। इसमें कर्म योग, ज्ञानयोग, भक्तियोग की बहुत सुन्दर ढंग से चर्चा हुई है।

यद्यपि गीता द्वापर युग में महाभारत के युद्ध के समय रणभूमि में किंकर्तव्यविमूढ़ अर्जुन को समझाने के लिए भगवान श्रीकृष्ण के द्वारा कही गई थी, किन्तु इस वचनामृत की प्रासंगिकता वर्ममान में ज्यादा महत्वपूर्ण है। वर्तमान में भोग-विलास में डूबे तथा धन के मद में अंधे मनुष्य को श्रीमदभगवदगीता सच्चा इन्सान बनाती है। हर व्यक्ति को वह सच्चा मार्ग दिखाती है। महाभारत के युद्ध के मैदान में जब अर्जुन ने अपने सामने कौरवों की अपार सेना देखी तो वह डर गया और अपनी दयनीय स्थिति के बारे में अपने मित्र भगवान श्रीकृष्ण से कहता है-

सीदंति मम गायाणि, मुखं चैव परिशुष्यति।
वेपथुश्च शरीरं में, रोमहर्षश्च जायते॥

अर्थात् (युद्ध के मैदान में कौरवों की सेना में खड़े हुए अपने पितामह को, गुरुओं को, अपने भाइयों को और सभी सगे-संबंधियों को देखकर) मेरा शरीर भयभीत हो रहा है, डर के मारे मेरा मुंह सूख रहा है, सारा शरीर कांप रहा है और मेरा रोम-रोम खड़ा हो रहा है।

इससे हमें सीख लेनी चाहिए। यह स्थिति केवल अर्जुन की ही नही हुई थी, आज संसार में हम सभी की है। इस संसार में हर आदमी अज्ञानी है, भयभीत है, डरा हुआ है। हम सभी के सामने हमारे अपने सगे-संबंधी ही खड़े हैं। हमें उन सबको पहचानना है। जिस तरह भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध में सही रास्ता दिखाया था उसी तरह इस संसार-रूपी युद्ध में भी उनके मुख से निकली पवित्र वाणी श्रीमदभगवतगीता हमें रास्ता दिखाती है।

श्रीमदभगवतगीता हर व्यक्ति को कर्म करने के लिए प्रेरित करती है। कर्म करना मनुष्य का प्रथम धर्म है। बिना कर्म किए कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में सफल नहीं हो सकता।

महाभारत का महानायक अर्जुन अपने समाने आने वाली समस्याओं से भयभीत होकर जीवन और क्षत्रिय धर्म से निराश हो गया था। जिस प्रकार एक सामान्य मनुष्य अपने जीवन की समस्याओं में उलझकर किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है और उसके पश्चात् जीवन रूपी युद्ध से पलायन करने का मन बना लेता है। अर्जुन की तरह ही हम सभी कभी-कभी अनिश्चय की स्थिति में होने पर या तो हताश हो जाते हैं और या फिर अपनी समस्याओं से दुखी होकर कर्तव्य से विमुख हो जाते हैं।

भारत वर्ष के ऋषियों ने गहन विचार के पश्चात् जिस ज्ञान को आत्मसात किया उसे उन्होंने 'वेद' नाम दिया। उसी ज्ञन को महर्षि वेदव्यास ने सामान्य जनों के लिए गीता में संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया है। वेदव्यास की महानता ही है, जो कि 11 उपनिषदों के ज्ञान को एक पुस्तक में बांध सके और मानवता को एक आसान युक्ति से परमात्म ज्ञान का दर्शन करा सके।

जो ज्ञान की बातें भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए भीमदभगवदगीता में कही हैं वैसी बातें संसार के किसी भी ग्रंथ में नही मिलतीं। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया कि -

सुख-दुखे समे कृत्वा, लाभलाभौ जयाजयौ।
ततो यद्धाय युज्यस्व, नैवं पाप मवाप्स्यसि॥

अर्थात् हे अर्जुन! तू सुख-दुख, लाभ-हानि और जय-पराजय को समान मानकर युद्ध में लग जा। इससे तुझे पाप नहीं लगेगा। अतः श्रीमदभगवतगीता के अनुसार हमें

किसी भी कार्य के करने पर लाभ-हानि की परवाह न करते हुए कार्य करना चाहिए।

श्रीमदभगवतगीता बदलते सामाजिक परिदृश्यों में अपनी महत्ता को बनाए हुए है और इसी कारण आधुनिकता ने इसकी प्रासंगिकता को बढ़ाया है तथा अधिक बोधगम्य बनाने का प्रयास किया है। इसकी एक विशेष बात यह है कि गीता से संबंधित सामान्य मनुष्य के संदेहों को अर्जुन के प्रश्नों माध्यम से उत्तर दिया है। निष्काम कर्म का गीता का संदेश आधुनिक युवाओं को भी लुभा रहा है। श्रीमदभगवतगीता विश्व के सभी धर्मों की सबसे प्रसिद्ध पुस्तकों में शामिल है।

सामान्य लोगों के लिए श्रीमदभगवतगीता का उपदेश अत्यन्त सारगर्भित व पुरातन है। यह ईश्वरीय वाणी है जिसमें सम्पूर्ण जीवन का सार एवं आधार है। गीता का प्रारंभ धर्म शब्द से होता है तथा गीता के अठारहवें अध्याय के अंत में इसे धर्म संवाद कहा है। धर्म का अर्थ है धारण करने वाला अथवा जिसे धारण किया गया है। धारण करने वाला जो है उसे आत्मा कहा गया है और जिसे धारण किया है वह प्रकृति है। आत्मा इस संसार का बीज अर्थात् पिता है और प्रकृति गर्भधारण करने वाली योनि अर्थात् माता है। आत्मा अक्षय ज्ञान का स्रोत है। ज्ञान शक्ति की विभिन्न मात्रा से क्रिया शक्ति का उदय होता है, प्रकृति का जन्म होता है। प्रकृति के गुण सत्व, रज, तम का जन्म होता है। सत्व-रज की अधिकता धर्म को जन्म देती है, तम-रज की अधिकता होने पर आसुरी वृत्तियां प्रबल होती हैं और धर्म की स्थापना अर्थात् गुणों के स्वभाव को स्थापित करने के लिए, सतोगुण की वृद्धि के लिए, अविनाशी ब्राह्मी स्थिति को प्राप्त आत्मा अपने संकल्प से देह धारण कर अवतार ग्रहण करती है।

श्रीमदभगवतगीता हर व्यक्ति को कर्म करने के लिए प्रेरित करती है। कर्म करना मनुष्य का प्रथम ध र्म है। बिना कर्म किए कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में सफल नहीं हो सकता।

सम्पूर्ण गीता शास्त्र का निचोड़ यह है कि बुद्धि को हमेशा सूक्ष्म करते हुए महाबुद्धि आत्मा में लगाये रखो तथा संसार के कर्म अपने स्वभाव के अनुसार सरल रूप से करते रहो। स्वभावगत कर्म करना सरल है और दूसरे के स्वभावगत कर्म को अपनाकर चलना कठिन है क्योंकि प्रत्येक जीव भिन्न-भिन्न प्रकृति को लेकर जन्मा है, जीव जिस प्रकृति को लेकर संसार में आया है उसमें सरलता से उसका निर्वाह हो जाता है। भगवान श्रीकृष्ण ने सम्पूर्ण गीता शास्त्र में बार-बार आत्मरत, आत्म स्थिर होने के लिए कहा है। स्वाभाविक कर्म करते हुए बुद्धि का अनासक्त होना सरल है। अतः इसे ही निश्चयात्मक मार्ग माना है। यद्यपि अलग-अलग देखा जाय तो ज्ञान योग, बुद्धि योग, कर्म योग, भक्ति योग आदि का गीता में उपदेश दिया है परन्तु सूक्ष्म दृष्टि से विचार किया जाय तो सभी योग बुद्धि से श्री भगवान को अर्पण करते हुए किये जा सकते हैं इससे अनासक्त योग निष्काम कर्म योग स्वतः सिद्ध हो जाता है।

गीता शास्त्र में इन सभी के प्रश्नों के उत्तर सहज ढंग से भगवान श्रीकृष्ण ने धर्म संवाद के माध्यम से दिये हैं। इस देह को जिसमें 36 तत्व जीवात्मा की उपस्थिति के कारण जुड़कर कार्य करते हैं, क्षेत्र कहा है और जीवात्मा इस क्षेत्र में निवास करता है, वही इस देह का स्वामी है। परन्तु एक तीसरा पुरुष भी है, अधिदैव अर्थात 36 तत्वों वाले इस देह (क्षेत्र) को और जीवात्मा (क्षेत्रज्ञ) का जब वह प्रकट होता है नाश कर डालता है। यही उत्तम पुरुष ही परम स्थिति और परम सत् है। यही नहीं, देह में स्थिर और देह त्यागकर जाते हुए जीवात्मा की गति का यथार्थ वैज्ञानिक एवं तर्कसंगत वर्णन गीता शास्त्र में हुआ है। जीवात्मा नित्य है और आत्मा (उत्तम पुरुष) को जीव भाव की प्राप्ति हुई है। शरीर के मर जाने पर जीवात्मा अपने कर्मानुसार विभिन्न योनियों में विचरण करता है। धर्म शब्द का प्रयोग गीता में आत्म स्वभाव एवं जीव स्वभाव के लिए जगह जगह प्रयुक्त हुआ है। इसी परिप्रेक्ष में धर्म एवं अधर्म को समझना आवश्यक है। आत्मा का स्वभाव धर्म है अथवा कहा जाए धर्म ही आत्मा है। आत्मा का स्वभाव है पूर्ण शुद्ध ज्ञान, ज्ञान ही आनन्द और शांति का अक्षय धाम है। इसके विपरीत अज्ञान, अशान्ति, कलेश और अधर्म का द्योतक है।

अन्त में मैं यही कहूंगी कि वर्तमान समय में गीता के उपदेशों की बहुत आवश्यकता है। श्रीमदभगवदगीता इन्सान को सच्चा रास्ता दिखाती है। इसलिए इसका अनुसरण हम सभी को अवश्य करना चाहिए। ❒

भजन प्रतियोगिता

शाहदरा जिला

गत 7 नंबर को शाहदरा जिले के आंबेडकर सेवा केंद्र में भजन प्रतियोगिता कार्यक्रम रहा। गायत्री मंत्र, गीत से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। 6 मंडलियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रथम स्थान पर शहीद भगत सिंह सेवा केंद्र की मंडली रही। द्वितीय स्थान पर लव कुश सेवा केंद्र की मंडली रही। सरोज जी, सीता जी, आयुषी जी ने प्रतियोगिता के परिणाम घोषित किए। पूर्वी विभाग से रामकरण जी, महेश जी, शांतिलाल जी, रजनी जी उपस्थित रहे। जिला से समस्त कार्यकारिणी उपस्थिति रही। सभी भजन मंडलियों को पुरस्कार में दीवार घड़ी दी गई। प्रथम स्थान पर आने वाली भजन मंडली को दीवार घड़ी के साथ साड़ियां भी दी गई। कुल संख्या 90 रही।

इंद्रप्रस्थ जिला

जिला इंद्रप्रस्थ विभाग पूर्वी में सनातन राधा कृष्ण मंदिर में भजन प्रतियोगिता हुई। 5 मंडली प्रतिभागी रही। अर्चना जी, रचना कक्कड़ जी और स्नेहा जी ने निर्णायक की भूमिका निभाई। 3 दानदाता भी आए थे। उन्हीं के द्वारा आज के उपहार और भोजन था। श्रीराम सेवा केंद्र की मंडली प्रथम और महर्षि वाल्मीकि सेवा केंद्र की मंडली द्वितीय रही। सभी मंडली को उपहार दिया गया। समस्त जिला इंद्रप्रस्थ कार्यकारिण ी और मयूर विहार से सहमंत्री प्रमोद जी, निरीक्षिका सुनीता मौर्या जी और रेखा गौतम जी भी आई थीं।

मयूर विहार जिला

पूर्वी विभाग में मयूर विहार जिले के राधे श्याम मंदिर, मयूर विहार फेस 1 में भजन मंडलियों की प्रतियोगिता हुई। 6 मंडली प्रतिभागी रही। पारुल गुप्ता जी और सुनीता सिंह जी निर्णायक थीं। दानादाता श्री जितेंद्र जी के द्वारा आज के कार्यक्रम में उपहार की व्यवस्था की गई थी। माता जानकी मंडली, 2 ब्लॉक त्रिलोक पुरी प्रथम और शिव शक्ति सेवा केंद्र शशि गार्डन की मंडली द्वितीय रही। सभी मंडलियों को उपहार दिए गए। प्रांत से निर्भय जी, कमल द्विवेदी जी, विपिन जैन जी व विभाग से विनीता गुप्ता जी, मुकेश मिश्रा जी रहे। कमल द्विवेदी जी व विनीता गुप्ता जी ने स्वयं सहायता समूह का विषय लिया। जिला इंद्रप्रस्थ से बहन हेमा उपाध्याय जी और रेखा नागपाल जी, विभाग से विभाग अध्यक्ष श्री विनोद बंसल और विभाग संगठन मंत्री श्री विनोद जैन कार्यक्रम में शामिल हुए।

गांधी नगर जिला

गत 19 नवम्बर को अग्रवाल धर्मशाला कैलाश नगर में भजन प्रतियोगिता हुई, जिसमें सेवा बस्तियों से 6 भजन मंडलियों ने भाग लिया। मुस्कान जी और सुनीता सिक्का जी द्वारा दीप प्रज्जवलित किया गया। सभी मंडलियों की बहुत ही सुंदर प्रस्तुति रही। प्रथम स्थान पर सर्वशक्ति महिला मंडल, कैलाश नगर और द्वितीय स्थान पर रामदूत सेवा समिति चंद्रपुरी

रही। तृतीय स्थान पर श्री जी भजन मंडली बलदेव पार्क रही। सभी मंडलियों की बहनों को उपहार स्वरूप साड़ी दी गई। कार्यक्रम के उपरांत जलपान की व्यवस्था रही। कार्यक्रम में विभाग से रजनी जी और जिले से जिला मंत्री पंकज जी, कोषाध्यक्ष परमेश्वर जी, बहिन समिति अध्यक्ष सविता जी, बहन मंत्री निर्मल जी, सहमंत्री संगीता जी, तपस्या जी, सरिता जी, रंजना जी और सभी शिक्षिका, निरीक्षकाओं का रहना हुआ। ❐

प्रवास से बल मिला कार्यकर्ताओं को

गत 3 नवंबर को राष्ट्रीय सेवा भारती के संयुक्त महामंत्री श्री विजय पुराणिक का प्रवास सेवा भारती, पूर्वी विभाग में रहा। साथ में प्रांत संगठन मंत्री और पूर्वी विभाग के पालक श्री शुकदेव जी भी रहे। इन लोगों ने पहले 'बुक बैंक' के दर्शन किए। फिर शाहदरा में सेवित जन से मिले। इसके बाद विस्तृत कार्यकारिणी बैठक हुई। ❐

कानूनी सलाह केन्द्रों का शुभारम्भ

गत 16 नवंबर को पश्चिमी विभाग में सेवा भारती व अधिवक्ता परिषद के सहयोग से 4 नए कानूनी सलाह केन्द्रों का शुभारम्भ हुआ। इस अवसर पर बड़ी संख्या में सेवा भारती के कार्यकर्ता और अधिवक्ता उपस्थित रहे। ❐

दान में मिली सिलाई मशीन

गत 6 नवंबर को बड़े भाई रामकरण जी के साथ प्रणव जी और रौनक जी के घर आजाद नगर जाना हुआ। उन्होंने 2,100 रुप और बजाज कंपनी की 14 सिलाई मशीन सेवा भारती, जिला शाहदरा को दान दी। सेवा भारती, जिला शाहदरा दोनों भाइयों का हृदय की गहराइयों से धन्यवाद करती है।

– शुकदेव भारद्वाज, जिला अध्यक्ष

चित्रकला प्रतियोगिता

गत 11 नवंबर को आंबेडकर सेवा केंद्र पर 'इनर व्हील' से आई बहनों ने एक भैया का जन्मदिन मनाया। इसके साथ ही जल बचाओ की थीम पर चित्रकला प्रतियोगिता रखी गयी। इसमे प्रथम, द्वितीय और तृतीय आने वाले बच्चों को पुरस्कार दिया गया तथा बाल संस्कार और बालवाड़ी के बच्चों को खाने-पीने की चीजें दी गईं। इस अवसर पर सेवा भारती, शाहदरा की कार्यकारिणी, शिक्षिका, निरीक्षिका भी उपस्थित रही। ❐

सैनिटरी नैपकिन का वितरण

रोट्रेक्ट क्लब दिल्ली और ह्यूमेनिटी फाउंडेशन दिल्ली के सहयोग से दिनांक 20 नवंबर, 2025 को लाजपत जिला दक्षिणी विभाग के जयदत्त सेवा केंद्र पर सैनिटरी नैपकिन वितरित किए गए। लगभग 100 से अधिक बहनें उपस्थित थीं। महिला चिकित्सक डॉ अभिलाषा गर्ग जी का मार्गदर्शन एवं परामर्श भी बहनों को मिला। ❐

बाल दिवस पर कार्यक्रम

सेवा भारती, दिल्ली द्वारा संचालित 'केशव विद्या मन्दिर' दक्षिणपुरी, जिला आंबेडकर नगर एवं विभाग रामकृष्णपुरम में बाल दिवस के उपलक्ष्य पर बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इस अवसर पर बच्चों को शिक्षाप्रद कहानियों के माध्यम से कुछ बातें बताई गईं। ❐

लोगों ने प्राप्त किया निःशुल्क न्यायिक परामर्श

गत 23 नवंबर, 2025 को द्वारका कोर्ट यूनिट ने अपने अंतर्गत आने वाले पांच निःशुल्क न्याय परामर्श केंद्र का सफलतापूर्वक संचालन किया। द्वारका सेक्टर 16 ए, कृष्णा बस्ती, शिवानी केंद्र और डाबरी मोड़ दादा देव मंदिर परिसर पर लोगों ने निःशुल्क परामर्श प्राप्त किया। इन न्याय केंद्रों पर श्री बी एन शर्मा, संतोष मिश्रा, महेश कुमार शर्मा, मनीषा बरुआ, निष्ठा चावला, परीक्षित बजाज, अभिषेक अग्रवाल, श्रीमती दुर्गा सिंह, नीतू चौहान आदि उपस्थित रहे। साथ ही लोगों का आह्वान भी किया गया कि वे इन केंद्रों पर निःशुल्क न्याय परामर्श का लाभ उठायें। द्वारका कोर्ट यूनिट अपने सभी समर्पित कार्यकर्ताओं का धन्यवाद करती है और उनसे ऐसे निरंतर प्रयासों की कामना करती है। ❐

राज्य की वास्तविक सम्पदा

■ गंगा प्रसाद सुमन

उज्जैन राज्य के शासक ने अवन्तिका राज्य को घेर लिया। उज्जैन के शासक की विजय हुई। अवन्तिका के राजा ने अपनी प्रजा को सामान सहित नगर खाली करने का आदेश दिया। अवन्तिका नरेश ने उज्जैन के सेनापति से अनुरोध किया कि यदि वह उसके साथ चलने वाले दस व्यक्तियों को मुक्त कर दें तो बिना शर्त स्वयं को समर्पित कर देंगे। सेनापति ने जानना चाहा कि वे किन व्यक्ति को मुक्त कराना चाहेंगे! अवन्तिक राजा ने नाम गिनाए- शस्त्र-धारक, शास्त्र-ज्ञाता, सन्त, वाणिज्यकर्ता, राजनीतिज्ञ, वैज्ञानिक, चिकित्सक, शिल्पकार, कृषक, काव्य-मर्मज्ञ। सेनापति ने यह शर्त स्वीकार कर ली। अवन्तिका नरेश के साथ चलने वाले दस सज्जनों को मुक्त कर दिया गया। अवन्तिका नरेश को उज्जैन नरेश के सामने उपस्थित किया गया तो उज्जैन नरेश ने चकित होकर दस व्यक्तियों के मुक्त होने का रहस्य जाना चाहा कि बताइए इसके पीछे रहस्या क्या है?

अवन्तिका नरेश ने स्वाभिमान से मस्तक उठाते हुए कहा- महोदय! पहले तो परस्पर वह व्यवहार किया जाए जो एक नरेश दूसरे नरेश के साथ व्यवहार करता है। मैं रहूं या न रहूं, कोई चिन्ता नहीं। कोई अन्तर नहीं आएगा। यदि उपर्युक्त बुद्धि के कुशल चितेरे, बौद्धिक प्राणी समाज व राष्ट्र को उन्नत करने वाले विद्यमान रहेंगे तो राज्य में पुनः सुख-शान्ति समृद्धि, सुशासन का साम्राज्य आएगा। राष्ट्र की सम्पति के स्वामी ये बुद्धिजीवी ही हैं। इन्हीं से भावी पीढ़ी के आदर्श व संस्कार स्थापित रहेंगे। भविष्य में भी कर्तव्यनिष्ठ सुनागरिकों का निर्माण होता रहेगा। अवन्तिका नरेश की युक्ति युक्त बातें सुनकर उज्जैन नरेश अत्यन्त प्रभावित हुए और द्रवित होकर अवन्तिका नरेश को शर्त-रहित मुक्त कर दिया और ससम्मान उसका राज्य भी लौटा दिया।

धीर, वीर, साधु, धर्मात्मा और विभिन्न कला के कुशल खिलाड़ी, वैज्ञानिक अपने अनुभव-जन्य जीवन को किसी महान साध्य के लिए लगा जाते हैं। वे ऐसी स्थाई धरोहर देन संसार को दे जाते हैं, जिनका उपयोग करती हुई मानव सन्तति धन्य-धन्य हो उठती है। 'तेरा वैभव अमर रहे माँ, हम दिन चार रहें या न रहें।'

BANSAL WIRE INDUSTRIES LTD.

BANSAL

Stainless Steel Wires - High/Medium Carbon Steel Wires
(Black and Galvonised)

Mfrs. : Low Carbon Steel Wires, Profile/Shaped Wires
(Black and Galvonised)

H.B. HHB & G.I. WIRES

Bansal Wire Industries Ltd.
F-3, Shastri Nagar, Delhi-110052 (India)
Tel. : +91-11-23648401, 23651890-91-92-93
Email : info@bansalwire.com, www.bansalwire.com

नंद नगरी जिले में भजन प्रतियोगिता

गत दिनों सेवा भारती नंद नगरी जिले में भजन मंडलियों की प्रतियोगिता हुई। इसमें विभाग से विभाग मंत्री श्रीमान गवेंद्र जी तथा जिले से जिला अध्यक्ष श्रीमान दामोदरन जी, जिला उपाध्यक्ष श्रीमान रमेश शुक्ला जी, संगठन मंत्री राज नारायण व अन्य कार्यकर्ता एवं शिक्षिकाएं उपस्थित रहीं। भजन प्रतियोगिता में चार भजन मंडलियों ने भाग लिया। चारों भजन मंडलियों को पुरस्कार दिए गए तथा अंत में जलपान की व्यवस्था की गई। ❐

कलंदर कॉलोनी में सामूहिक जन्मोत्सव

सेवा भारती स्ट्रीट चिल्ड्रेन प्रोजेक्ट कलंदर कॉलोनी दिल्ली में 24 नवंबर 2025, दिन सोमवार को केंद्र में अध्ययन करने वाले छात्रों का सामूहिक जन्मोत्सव का कार्यक्रम विधिवत हवन पूजन के साथ संपन्न हुआ। ऐसे सभी बच्चे जिनका जन्म सितंबर से नवंबर महीने में हुआ है उन सभी बच्चों ने हवन कार्यक्रम में भाग लिया। ऐसे बच्चों की संख्या 10 रही। कार्यक्रम में कार्यकारिणी के सभी सदस्यों ने भाग लिया तथा बच्चों को आशीर्वाद दिया। उपस्थित सभी लोगों को पंडित जी के द्वारा वैदिक रीति से जन्मदिन मनाने का महत्व बताया गया। पूरण आहुति के उपरान्त यज्ञ प्रार्थना हुई। सभी बच्चों को पुष्पों के द्वारा आशीर्वाद दिया गया।

हवन के बाद जन्मदिन वाले सभी बच्चों को उपहार प्रदान किया गया। उपस्थित सभी लोगों को प्रसाद के रूप में केले बांटे गए। उपहार के रूप में बच्चों को पेंसिल सेट दिए गए। ❐

मना शहीदी दिवस

श्री गुरु तेग बहादुर जी के 350वें शहीदी दिवस के अवसर पर सेवा भारती के पूर्वी विभाग के सभी जिलों के केंद्रों पर कार्यक्रम हुए। इनमें कार्यकर्ताओं और अन्य लोगों ने श्री गुरु तेगबहादुर जी को श्रद्धांजलि दी और उनके बलिदान को याद किया। बता दें कि बलिदान, मानवता और शांति के प्रतीक श्री गुरु तेग बहादुर जी को हिन्द के रक्षक स्वरूप समझ कर ही 'हिन्द की चादर' से सम्बोधित किया गया है।

रजिस्टर्ड क्रमांक 40605/1983
तिथि 10-11 दिसम्बर, 2025, प्रकाशन तिथि-6-7 दिसम्बर, 2025
Posted at - LPC, DELHI RMS, DELHI-110006

डाक रजिस्टर्ड नंबर
DL(ND)-11/6188/2025-27

विद्यालय के लिए सहयोग

सेवा भारती दिल्ली द्वारा संचालित सेवा विद्यामन्दिर दक्षिणपुरी, रामकृष्ण पुरम विभाग में 'रोटरी क्लब साऊथेंड' द्वारा 29 नवंबर 2025 को वहां शिक्षारत छात्रों के बैठन हेतु स्कूल डेस्क प्रदान किये। इस सहयोग के लिए सेवा भारती परिवार क्लब को धन्यवाद देती है। ❐

विज्ञापन और लेख के लिए आग्रह

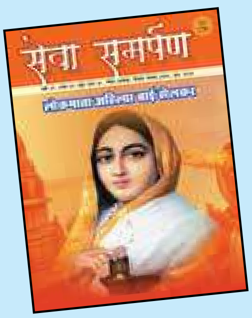

सेवा समर्पण

प्रिय पाठको,

सेवा समर्पण में सुधार के लिए अपने अमूल्य सुझाव हमें भेज सकते हैं। इसकी सदस्यता लेने के साथ ही आप अपनी रचनाएं (लेख/कहानी/कविता) भी निम्न पते पर भेज सकते हैं-

सेवा भारती, 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001

फोन-011-23345014-23345015

सदस्यता शुल्क निम्न प्रकार है :-

वार्षिक 200/- एवं आजीवन 1500/

नीचे वर्णित एकाउन्ट न. में आप शुल्क जमा करा सकते हैं।

Account Name- Sewa Prakashan

Account No. - 902320100-24024

IFCS No. - CNRB 0019023

मुद्रक/संपादक/प्रकाशकः डॉ. शिवाली अग्रवाल द्वारा सेवा प्रकाशन न्यास के लिए 13, भाई वीर सिंह मार्ग, गोल मार्केट, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा शक्ति प्रिन्टर्स 1/3001, गली न.-16, रामनगर, मंडोली रोड, शाहदरा, दिल्ली-32, से मुद्रित।